कालिदास कृत

ऋतु-संहार

रांगेय राघव

ऋतु संहार
रांगेय राघव

लेखक की अन्य पुस्तकें

काका	
आंधी की नींवें	
एक छोड़ एक	५.००
गोरखनाथ और उनका युग	१०.००
एंटीगोने	२.००
ईडीपस : पाप, प्रेम और मृत्यु	४.००
हिन्दी साहित्य की धार्मिक और सामाजिक पूर्व पीठिका	प्रेस में

कालिदासकृत

ऋतु-संहार

(संस्कृत पद्य हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद तथा १६ रंगीन चित्रों सहित)

रांगेय राघव

आत्माराम एण्ड संस
दिल्ली चण्डीगढ़ जयपुर लखनऊ

Ritu Samhar

(Sanskrit Text with Hindi and English version)

by Rangay Raghav

Price Rs. 25.00

Copyright © 1973, Atma Ram & Sons, Delhi-6

प्रकाशक | रामलाल पुरी, संचालक
आत्माराम एण्ड संस
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

शाखाएँ | कश्मीरी गेट, दिल्ली-६
विश्वविद्यालय क्षेत्र, चण्डीगढ़
चौड़ा रास्ता, जयपुर
१७ अशोक मार्ग, लखनऊ

मूल्य | पच्चीस रुपये

मुद्रक | रूपाभ प्रिंटर्स
शाहदरा दिल्ली-३२

प्रकाशकीय

महाकवि कालिदास के ऋतु-संहार का संस्कृत-साहित्य में एक विशिष्ट स्थान है। काव्य और नाटक महाकवि को अमर कर गये हैं, पर बहुत कम लोग इस तथ्य से परिचित होंगे कि 'ऋतु-संहार' महाकवि कालिदास का एक मात्र गीति-काव्य है और कला की दृष्टि से वह उनकी शेष रचनाओं को पीछे छोड़ गया है।

कालिदास मुख्यतया 'संयोग शृंगार' के कवि थे। ऋतु-संहार के षड़ऋतु वर्णन में उनकी शृंगार-रस-प्रतिभा अबाध व उन्मुक्त होकर प्रवाहित हुई है। कारण ? उनके मार्ग में न किसी प्रकार का कथा का बंधन था, न मर्यादा की अर्गला। मेघदूत व कुमार-संभव भी निस्संदेह शृंगार-रस की अनूठी काव्य-कृतियाँ हैं, पर मेघदूत में 'कथा के बंधन' ने और कुमार-संभव में 'मर्यादा की अर्गला' ने कवि को अप्रतिहत-गति नहीं रहने दिया। मेघदूत में उन्हें अपने आपको वर्षा ऋतु के वर्णन तक सीमित रखना पड़ा, और कुमार-संभव में शिव-पार्वती के प्रति पूजा-बुद्धि के कारण वे खुल कर नहीं खेल सके। किंवदंती तो यहाँ तक है कि कुमार-संभव के आठ सर्ग पूरे करने के बाद कवि को अपनी कलम रोक देनी पड़ी। शिव-पार्वती के संभोग-शृंगार के उनके चित्र इतने उत्तेजक थे कि उस काल का साहित्य-जगत उन्हें बर्दाश्त न कर सका। किंवदंती के अनुसार, कुमार-संभव के शेष नौ सर्ग बाद के कवियों ने जैसे-तैसे पूर्ण किये।

ऋतु-संहार में कवि के सामने ऐसी कोई बाधा नहीं थी। भिन्न-भिन्न ऋतुओं के वर्णन के व्याज से शृंगार-रस की तमाम बारीकियों का कवि ने सफलता पूर्वक रहस्योद्घाटन कर दिया है। शृंगार रस के विविध आरोहों-अवरोहों का यह एक प्रकार से दुर्लभ एलबम है।

स्वर्गीय डा० रांगेय राघव की सधी हुई लेखनी ने ऋतु-संहार के एक साथ तीन अनुवाद प्रस्तुत कर दिये हैं। पहला अनुवाद हिन्दी पद्यों में, दूसरा अंग्रेजी पद्यों में, और तीसरा चित्रकला के माध्यम से। कहना कठिन है कि तीनों में से कौन-सा रूपांतर दूसरे से बढ़कर है।

हिन्दी-जगत में इस प्रकार का प्रयत्न अपने आप में एकदम अपूर्व एवं अनूठा है।

प्रथमः सर्गः

ग्रीषम

CANTO I

SUMMER

१

प्रिये ! आया ग्रीष्म खरतर !
सूर्य्य भीषण हो गया अब, चंद्रमा स्पृहणीय सुंदर,
कर दिये हैं रिक्त सारे वारिसंचय स्नान कर कर,
रम्य सुखकर सांध्यबेला शांति देती है मनोहर,
शांत मन्मथ का हुआ है वेग अपने आप बुझ कर,
दीर्घ तप्त निदाघ देखो, छा गया कैसा अवनि-पर,
प्रिये ! आया ग्रीष्म खरतर !

प्रचण्डसूर्य्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः सदावगाहक्षतवारिसंचयः
दिनान्तरम्योऽभ्युपशान्तमन्मथो निदाघकालोऽयमुपागत प्रिये ।

With the blazing sun, the longed for moon,
Tranquil cupid, beauteous close of day,
Emptying the reservoirs by repeated baths,
Sweet love ! now summer ~~is~~ has come.

सुघर मधुर विचित्र हैं जलयंत्र मंदिर औ' गृहों में,
चंद्रकान्ता मणि लटकतीं झूलतीं वातायनों में,
सरस चंदन लेप कर तन ग्लानि हरने को निरत मन,
व्यस्त हैं सब, लो प्रिये ! अब हँस उठा है नील निस्वन,
तिमिर हर कर, अमृत निर्झर शांत शशधर मुस्कराया,
प्रिये खरतर ग्रीष्म आया !

निशाः शशाङ्कक्षतनीलराजयः क्वचिद्विचित्रं जलयन्त्रमन्दिरम्
मणिप्रकाराः सरसं च चन्दनं शुचौ प्रिये यान्ति जनस्यसेव्यताम् ।

Lovely fountains play in Variegated homes,
Chandra Kanta[1] jems dangle
loosely in the windows,
Men besmearing sandal on their bodies
seek shelter from heat,
Cool nectar flows from the moon beams
Soothes the drowsy eyes.

1. Name of the Jem. It drips when moonbeams touch it.

प्रिया मुख उच्छ्वास कंपित सुप्त मदन जगा रहे हैं,
गीत तन्त्री से उलझ कर गूंज कर पुलका रहे हैं,
शांत स्तब्ध निशीथ में सुरभित मनोहर हर्म्यतल में
गीत गतिलय में विसुध कामी पिपासा में विकल हैं,
गूंजती झंकार पर मनुहार स्वर रह रह कँपाया,
प्रिये खरतर ग्रीष्म आया !

सुवासितं हर्म्यतलं मनोहरं प्रियामुखोच्छ्वासविकम्पितं मधु
सुतन्त्रिगीतं मदनस्य दीपनं शुचौ निशीथेऽनुभवन्ति कामिनः।

The breaths of the sweetheart fragrant,
thrill and make the drowsy cupid smart,
And charms that stream with the lyre's note
tinkle on the fragrant palace roofs —
Nay, give the lovers restless lust encore.

मेखला से बँध दुकूल सजे सघन मनहर हुए हैं,
अलसभार नितंब मांसल-बिंब से कंपित हुए हैं,
हार के आभरण में स्तन चंदनांकित हिल रहे हैं,
शुद्ध-स्नान-कषाय-गंधित अंग, अलकें झूम हँसतीं
रूप की ज्योत्स्ना बिछा कर ग्रीष्म का अवसाद हरतीं
योषिताएं कामियों को तृप्ति देती हैं मधुरतर
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

नितम्बबिम्बैः सदुकूलमेखलैः स्तनैः सहाराभरनैः सचन्दनैः
शिरोरुहैः स्नानकषायवासितैः स्त्रियो निदाघं शमयन्ति कामिनाम् ।

Strings of pearls dangle on the women's
quivering sandal smeared breasts,
Clean bathed bodies of the damsels are scented sweet,
Fleshy hips are covered with thin raiment
and girdle of gold,
Dark tresses of hair play with the breeze,
gratifying the desirous lovers, beauty speaks —
Nons avons change tout cela[1].

1. We have changed all that (Fr.)

क्वणित नूपुर गुंज, लाक्षा रागरञ्जित चरण धर धर
प्रिय नितंबिनि सलज पग पग पर गुंजातीं हंस कल स्वर
मदन छवि साकार करतीं स्वर्ण रशना को डुला कर,
तुहिन से सित हार चंदन लिप्त स्तन पर थिरथिरक कर
इन्द्रजाल न डाल देते, कर न किसका हृदय आतुर,
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

नितान्तलाक्षारसरागरञ्जितैर्नितम्बिनीनां चरणैः सनूपुरैः
पदे पदे हंसरुतानुकारिभिर्जनस्य चित्रं क्रियते समन्मथम् ।
पयोधराश्चन्दनपङ्कचर्चितास्तुषारगौरार्पितहारशेखराः
नितम्बदेशाश्च सहेममेखलाः प्रकुर्वते कस्य मनो न सोत्सुकम् ।

Like swan's sweet chuckle,
nupurs[1] jingle on the Laksha[2]-painted feet,
When the damsels with heavy rumps do move
the dangling girdles tinkle sweet.
And when dewwhite pearl strings shake
On their quaking sandal smeared breasts,
Oh ! whom do they not enchant ?

1. An ornament worn on the toes.
2. Lac.

६

स्वेद से आतुर, चपल कर वस्त्रनिजभारी हटा कर
योषिताएँ बाहुमूल सुरम्य अपने पोंछ सत्वर
गोल उन्नत गौर यौवनमय स्तनों को घेर देतीं,
पारदर्श महीन अंशुक में उन्हें है बांध लेतीं,
शांति के निश्वास ले उद्वेग ऊष्मा का हटा कर,
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

समुद्गतस्वेदशिताङ्गसंधयो विमुच्य वासांसि गुरूणि सांप्रतम्
स्तनेषु तन्वंशुकमुन्नतस्तना निवेशयन्ति प्रमदाः सयौवनाः ।

Perspiring women quickly remove perplexed
their heavy garments
and wipe off their underarm's - sweat.
And in thin gauzy vests do cover
their shapely upraised snow-white breasts.

शीत चंदन सुरभिमयजल सिक्त व्यजनों का अनिल रे,
कुसुममाला से सुसज्जित पयोधर मांसल सुघर रे,
वल्लकी के काकली कल गीत स्वर कोमल लहरते
सुप्त खोये काम को हैं फिर जगा देते पुलकते,
हेम झीनी किरन बिछ झिलमिल रिझातीं रूप छाया,
प्रिये खरतर ग्रीष्म आया !

सचन्दनाम्बुव्यजनोद्भवानिलैः सहारयष्टिस्तनमण्डलार्पणैः
सवल्लकीकाकलिगीतनिस्वनैर्विबोध्यते सुप्त इवाद्य मन्मथः।

Cool breeze of the fans
drenched with sandal perfumed water,
Lovely plump breasts of women
Covered with flower garlands,
And notes from the lyre vibrating last,
Ring a thrill in the formless love-god's heart.

निशा में सित हर्म्य में सुख नींद में सोई सुघरवर
योषिताओं के वदन को बार बार निहार कातर
चंद्रमा चिर काल तक, फिर रात्रिक्षय में मलिन होकर
लाज से पाण्डुर हुआ-सा है विलम जाता थकित उर
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

सितेषु हर्म्येषु निशासुयोषितां सुखप्रसुप्तानि मुखानि चंद्रमाः
विलोक्य नूनं भृशमुत्सुकश्चिरं निशाक्षये याति ह्रियेव पाण्डुताम् ।

Perusing the faces of damsels sweet
sleeping with content on the crystal harem's roofs,
The envious moon wanes of shame
consumed in the dawn,
And goes tired and lost with a pale face.

लुओं पर चढ़ घुमड घिरती धूलि रह रह हरहरा कर
चण्ड रवि के ताप से धरती धधकती आर्त्र होकर
प्रियवियोगविदग्धमानस जो प्रवासी तप्त कातर
असह लगता है उन्हें यह यातना का ताप दुष्कर
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

असह्यवातोद्धतरेणुमण्डला प्रचण्डसूर्यातपतापितामही
न शक्यते द्रष्टुमपि प्रवासिभिः प्रियावियोगानलदग्धमानसैः ।

Dust storms rage,
Loo slaps with a dash,
The scorching sun burns the earth enlaced,
Insufferable torture to lovelorn hearts
this grievous heat becomes.

तीव्र आतपतप्त व्याकुल आर्त्त हो महती तृषा से
शुष्कतालू हरिण चंचल भागते हैं वेग धारे,
वनांतर में तोय का आभास होता दूर क्षण भर
नील अञ्जन सदृश नभ को वारि शंका में विसुर कर
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

मृगाः प्रचण्डातपतापिता भृशं तृषा महत्यापरिशुष्कतालवः
वनान्तरे तोयमिति प्रधाविता निरीक्ष्य भिन्नाञ्जनसन्निभं नभः ।

Scorched by the blaze,
with thirst unquenched,
the parched - throated deer with swift feet run,
The blue of the sky and the forest's end
are the mirage once and again and again.

सविभ्रमसस्मित नयन बंकिम मनोहर जब चलातीं
प्रिय कटाक्षों से विलासिनि रूप प्रतिमा गढ़ जगातीं
प्रवासी उर में मदन का नवल संदीपन जगा कर
रात शशि के चारु भूषण से हृदय जैसे भुला कर,
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

सविभ्रमैः सस्मितजिह्मवीक्षितैर्विलासवत्यो मनसिप्रवासिनाम्
अनङ्गसंदीपनमाशु कुर्वते यथा प्रदोषाः शशिचारु भूषणाः ।

The formless love[1] god gets a form again
when the enchantress looks askance
at lovelorn travellers
and charms their confounded heart with ease,
Like night emblazoned by alluring ornament —
the moon.

1. Indian cupid—Ananga.

तप्त होकर रेणु पथ की आग-सी बिखरा रही है
कुटिल गति से चपल चलते सर्प को झुलसा रही है,
लो अधोमुख उच्छ्वसित हो बारबार विषाद से भर
फणी बैठा है मयूर तले सकल भयभीति तज कर,
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

रवेर्मयूखैरभितापितो भृशं विदह्यमानः पथि तप्तपांसुभिः
अवाङ्मुखो जिह्मगतिः श्वसन्मुहुः फणीमयूरस्य तले निषीदति ।

The burning sands emit furious heat
afflict the snake, with lowered hood panting,
speeding with crooked creep aggrieved.
Behold ! the snake now with fear no more,
Rests in the shade, at his enemy peacock's feet.

तीव्र जलती है तृषा अब भीम विक्रम वीर उद्यम
भूल अपना, श्वास लेता बार बार विश्रांत शमदम
खोलमुख निज जीभ लटका अग्रकेसरचलितकेशरि,
पास के गज भी न उठ कर मारता है अब मृगेश्वर
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

तृषा महत्या हतविक्रमोद्यमः श्वसन्मुहुर्दूरविदारिताननः
न हन्त्यदूरेऽपि गजान्मृगेश्वरो विलोलजिह्वश्चलिताग्रकेसरः।

Malignant heat makes the thirst more acute
and now the king of the jungle of prowess famed,
Forgetting his valour pants perturbed,
Open-mouthed, dangling - tongued, with
quivering manes,
And kills not the nearby elephants too.

किरणदग्ध, विशुष्क अपने कण्ठ से अब शीत सीकर
ग्रहण करने, तीव्र वर्धित तृषा पीडित आर्त्त कातर
वे जलार्थी दीर्घगज भी केसरी का त्याग कर डर
घूमते हैं पास उसके, अग्नि सी बरसी हहर कर
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

विशुष्ककण्ठाहृतसीकराम्भसो गभस्तिभिर्भानुमतोऽनुतापिताः
प्रवृद्धतृष्णोपहता जलार्थिनो न दन्तिनः केसरिणोऽपि विभ्यति ।

Sweltered and thirsty
dry throated huge elephants,
To come by cool showers—
just a few drops of water,
Overcoming the fright of the lion
glide about him with no more fear.

क्लांत तन मन रे कलापी तीक्ष्ण ज्वाला में झुलसता
बर्ह में धरणीश बैठे सर्प से कुछ भी न कहता;
भद्रमोथा सहित कर्दम शुष्क-सर को दीर्घ अपने
पोतृमण्डल से खनन कर भूमि के भीतर दुबकने
वराहों के यूथ रत हैं, सूर्य्य-ज्वाला में सुलग कर
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

हुताग्निकल्पैः सवितुर्गभस्तिभिः कलापिनः क्लान्तशरीरचेतसः
नभोगिनं घ्नन्ति समीपवर्तिनं कलापचक्रेषुनिवेशिताननम् ।
सभद्रमुस्तं परिशुष्ककर्दमं सरः खनन्नायतपोतृमण्डलैः
रर्वेमयूखैरभितापितो भृशं बराहयूथोविशतीव भूतलम् ।

Burnt by the flames of the sun
The nervous peacock says nothing to the snake
huddled in his feathers.
And herds of wild boars dig the slushy
dried up mud of the pools for refuge
with their snouts
Extirpating the Bhadramotha[1]-moss.

1. Name of the moss—a kind.

दग्ध भोगी तृषित बैठे छत्रसे फैला विकल फन
निकल सर से कील भींगे भेक फनतल स्थित अभयमन;
निकाले संपूर्ण जाल-मृणाल करके मीन व्याकुल,
भीत द्रुत सारस हुए, गज परस्पर घर्षण करें चल,
एक हलचल ने किया पंकिल सकल सर हो तृषातुर,
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

विवस्वता तीक्ष्णतरांशुमालिना सपङ्कतोयात्सरसोऽभितापितः
उत्प्लुत्य भेकस्तृषितस्य भोगिनः फणातपत्रस्य नेलनिषीदति ।
समुद्धृताशेषमृणालजालकं विपन्नमीनं द्रुत भीतसारसम्
परस्परोत्पीडनसंहतैर्गजैः कृतं सरः सान्द्रविमर्द कर्दमम् ।

Beneath the parasols of the unshrivelled hoods
of the thirsty cobras
now fearless muddy frogs rest
emerging from the ponds.
Joggling thirsty elephants with quick impact
pull out the lotus pedicels and stalks,
frighten the fishes and cranes,
and puddle the water of the pool
with splatter dash.

रवि प्रभा से लुप्त शिर-मणि-प्रभा जिसकी त्रस्त फणिधर
लोल जिह्व, अधीर मारुत पीरहा, आलीढ होकर
सूर्य्य ताप तपा हुआ विष अग्नि झुलसा आर्त्त कातर
तृषाकुल मण्डूककुल को मारता है अब न विषधर
प्रिये ! आया ग्रीष्म खरतर !

रविप्रभोद्भिन्नशिरोमणिप्रभोविलोलजिह्वाद्वयलीढमारुतः
विषाग्निसूर्यातप तापितः फणी न हन्तिमण्डूककुलं तृषाकुलः ।

With his shineless jewel[1]
in the blaze of the sun,
the coiled up, giddy tongued snake
breathes hard,
and no more swallows the thirsty frogs.

1. It is supposed that snakes keep jewels on their heads.

प्यास से आकुल फुलाये वक्त्र नथुने उठा कर मुख
रक्त जिह्व सफेन चंचल गिरि गुहा से निकल उन्मुख
ढूंढने जल चल पडा महिषीसमूह अधीर होकर
धूलि उड़ती है खुरों के घात से रुँद ऊष्ण सत्वर
प्रिये ! आया ग्रीष्म खरतर !

सफेन लोलायतवक्त्र संपुटं विनिःसृतालोहितजिह्वमुन्मुखम्
तृषाकुलं निःसृतमद्रिगह्वरादवेक्ष्यमाणं महिषीकुलं जलम् ।

With upraised heads and nostrils wide,
bloody dangling tongues and foamy mouths,
the thirsty herds of buffaloes
emerge from the caves of the hills
in search of water,
And leave behind the hovering hoof-crushed dust.

१६

तीक्ष्ण दाह प्रचण्ड से हैं शुष्क शष्यसमस्त अंकुर
परुष पवन प्रवेग से पत्ते उड़ाता शुष्क हरहर,
खींच लेता दीप्त दिनकर सरोवर जल क्षीणतर कर
ढूंढता वन प्रांत में दल उच्चस्थल अति भीत होकर
वारि संचय हो कहीं यदि शेष प्रियतर,
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

पटुतरदवदाहोच्छुष्कसस्यपुरोहाः
परुषपवनवेगोत्क्षिप्तसंशुष्कपर्णाः
दिनकरपरितापक्षीणतोयाः समन्ता—
द्विदधति भयमुच्चैर्वीक्ष्यमाणा वनान्ताः।

The entire foliage is arid and dry,
The severe wind scatters the dried up leaves,
The flaming sun evaporates the
waters from the ponds and the pools;
The herds seek the highest spots in the jungle
for espying water, frightened to the core.

२०

शीर्णपर्णों के द्रुमों पर हांफता है अब विहगकुल
गिरि गुहा में लताकुञ्जों में छिपा है क्लांत कपिकुल
नीलगायों के जलेच्छुक मूथ करते भ्रमण प्यासे,
कूप जल करते ग्रहण वे शरभ अकुटिल तृषित हारे।
व्योम अपनी की पिपासा छा गई है अब दिगंतर,
प्रिये ! आया ग्रीष्म खरतर !

श्वसिति विहगवर्गः शीर्णपर्णद्रुमस्थः
कपिकुलमुपयाति क्लान्तमद्रेर्निकुञ्जम्
भ्रमति गवययूथः सर्वतस्तोयमिच्छ—
ञ्छरभकुलजिह्मं प्रोद्धरत्यम्बुकूपात्।

Thirsty birds pant on the
withered trees,
The monkeys hide in the caves and the groves,
And the herds of wild cows roam dried tongued,
And the terrible sarabhs[1] glut water
from the wells.

1 A legendary animal.

२१

ज्यों प्रफुल्ल कुसुम्भ नूतन—स्वच्छबिंब सिंदूरधारे—
अग्नि, मारुतके प्रबलतम वेग से चल प्रतिदिशा रे
निकट के तरु लता शाखा घेर आलिंगन चपलमें
फैलता है, ढेर अंगारे सुलगते भूमि तल में,
वह प्रचण्ड दवाग्नि हर हर सी मचाता वह्नि झरझर,
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

विकचनवकुसुम्भस्वच्छसिन्दूरभासा
प्रबल पवनवेगोद्भूतवेगेन् तूर्णम्
तटविटपलताग्रालिङ्गनव्याकुलेन
दिशि दिशि परिदग्धा भूमयः पावकेन।

Of full-bloomed-kusumbh[1] hue or vermillion tinge
Fire, fanned by the gusts of the mighty wind
envelops the nearby trees and shrubs,
and spreads in the forests with a shower of flames.

1 A flower

२२

पवन से वर्द्धित हुमकता गिरि गुहाएं घेरता है
पटुनिनादी शुष्क बांसों के स्थलों में फूटता है,
फैल जाता है तृणों में वृद्धि पाता एक क्षण में
प्रांतलग्नदवाग्नि मृग के समूहों को छेड़ पल में
कर रहा व्याकुल सभी को भीम होता चण्ड सत्वर,
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

ज्वलति पवनवृद्धः पर्वतानां दरीषु
स्फुटति पटुनिनादैः शुष्कवंशस्थलीषु ।
प्रसरति तृणमध्ये लब्धवृद्धिः क्षणेन
ग्लपयति मृगवर्गं प्रान्तलग्नो दवाग्निः

Emboldened by the breeze
the fire enshrouds the caves,
sprouts in the quaking, dried up,
cracking cluster of bamboo trees,
spreads fast in the grass and straws
augmented every second
the forest fire bewilders the herd of deer.

२३

शाल्मलीवनमें प्रचुर हो स्फुरण करता है असीमित
कोटरों में द्रुमों के वह कनक गौर समान दीपित,
पीतदलशाखा खड़े जो दीर्घ तरु उनको गिरा कर
अनिल कंपित अनल चंचल विपिनमें चलता गरजकर,
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

बहुतर इव जातः शाल्मलीनां वनेषु
स्फुरति कनकगौरः कोटरेषु द्रुमाणाम्
परिणतदल शाखानुत्पतन्प्रांशुवृक्षा—
न्भ्रमति पवनधूतः सर्वतोऽग्निर्वनान्ते ।

The fire expands illimitably in the sh'almali[1] forests
And in the hollows of the trees
pulsates with a golden streak;
Extirpating the gigantic withered trees
The tornado sweeps and sets the entire forest ablaze

1 A tree

गजगवय मृगराज अपने वैर भाव विसार, झुलसे
मित्र से सब साथ होकर, गिरिगुहाश्रय भीत तज के
भागते हैं अब नदी के पुलिन की इच्छा हृदय धर,
कर दिये हैं मित्र, भीषण अग्नि ने रिपु एक क्षण भर,
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

गजगवयमृगेन्द्रा वह्निसंतप्त देहा
सुहृद इव समेता द्वन्द्वभावं विहाय
हुतवहपरिखेदादाशु निर्गत्य कक्षा—
द्विपुलपुलिनदेशान्निम्नगां संविशन्ति ।

Flocked together, now scorched by the flames,
Elephants, cows and lions are no more
hostile to each other,
Frightened they abandon their respective shelters,
afflicted by fire, with fiery speed
make their way to the extensive river bank.

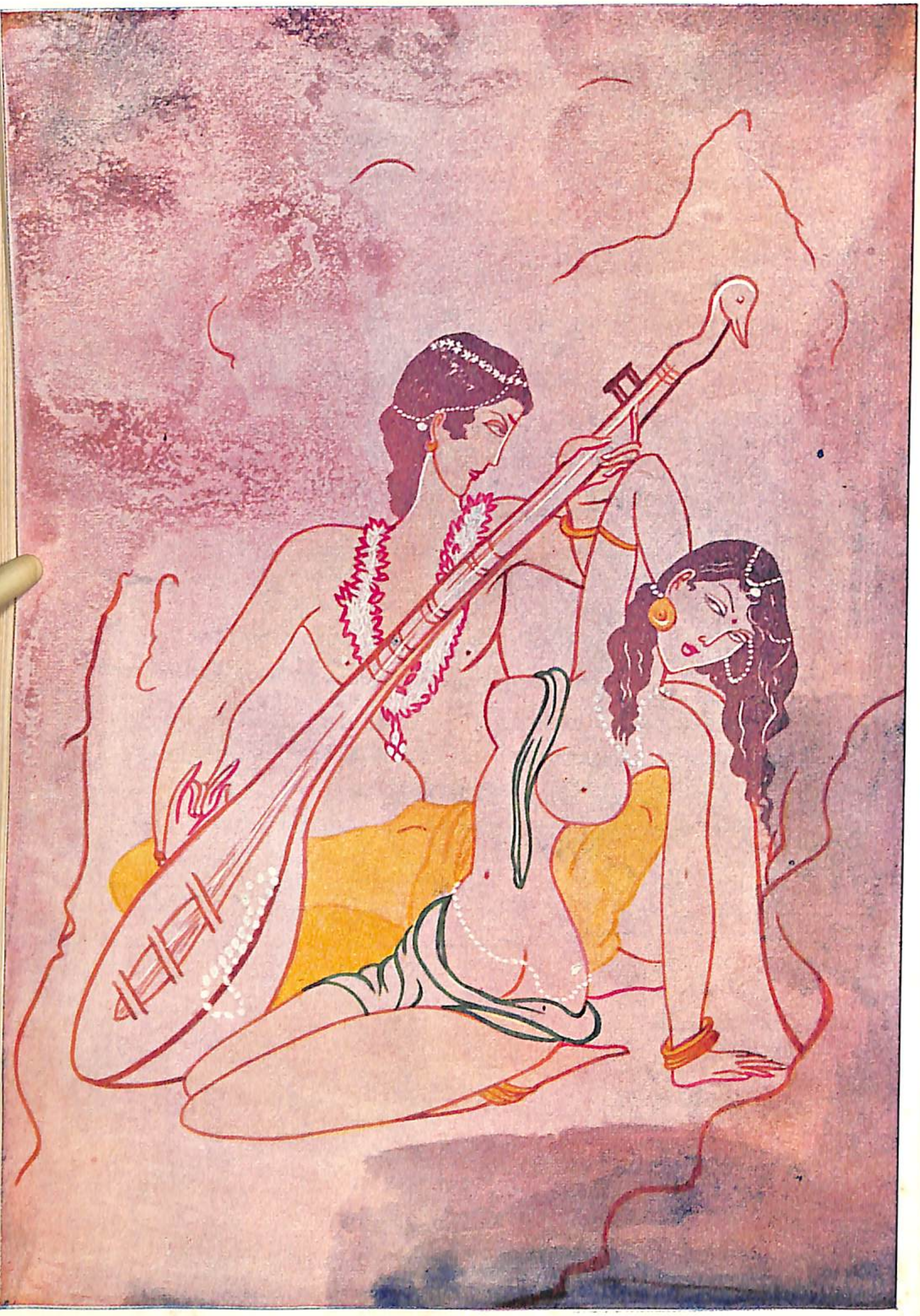

कमल दल से व्याप्त, पाटल गंधमय चल जल लहरते,
स्नान कर उस सुखसलिल से शशि किरन माला पहनते,
स्फटिक हर्म्यों में युवतियों के चपल सुख के सहारे
बीत दीर्घ निदाघ जाता गीत झंकृति की विभा से,
पिकस्वने ! मेरी सुराली रागिणी ! आलोक मंथर !
प्रिये आया ग्रीष्म खरतर !

कमलवन चिताम्बुः पाटलामोद रम्यः
सुख सलिल निषेकः सेव्यचंद्रांशुहारः
व्रजतु तव निदाघा कानिनीभिः समेतो
निशि सुललितगीते हर्म्यपृष्ठे सुखेन ।

Bathing with the refreshing water cool,
pervaded by lovely lotus blooms,
scented by the fragrance of rosy flowers,
Enjoying the wreaths of flowers and sweet moonbeams,
with pleasure the summer night passes off,
Sweet songstress ! on the harem's happy roofs
in the company of charming damsels gay.

द्वितीय : सर्ग :

पावस

CANTO 2

PAVASA

आगई पावस प्रिये लो !

मत्त कुञ्जर सदृश जलधर नव्यसीकर से रिझाता
वज्रनादकठोर करकर राव मर्दल सा बजाता
कामिजन प्रियक्रांति उत्तम धार कर निज नवलतन में
उडा विद्युत् की पताका राजवत् आया गगनमें
सतत डंबर भीम अंबर;
आ गई पावस प्रिये लो !

ससीकराम्भोधरमत्तकुञ्जरस्तउत्पिताकोऽशनिशब्दमर्दलः
समागतो राजवदुद्धतद्युतिघनागमः कामिजनप्रियः प्रिये ।

Ahoy ! the bewitching cloud
moves like a wild elephant,
And with fresh showers it captivates the hearts,
And thunder lightning roars resonant
like the beat of drums.
Enthralling the lustful hearts
with lovely splendour
the lustrous cloud with his lightning standard
steps into the sky like an Emperor proud.
Sweet heart, the rainy season has come.

२७

नील इंदीवरमधुर की क्रांतिवाले श्याम जलधर
प्रभिन्नाञ्जनराशि सेस्तर-स्तरजमे अतिपीनहोकर
गर्भिणी के स्तनाग्रों की श्याम प्रभले छा दिगंतर
व्योममें उमड़े घुमड़कर; आगई पावस प्रिये लो !

नितान्तनीलोत्पलपत्रकान्तिभिःक्वचित्प्रभिन्नाञ्जनराशिसन्निभैः
क्वचित्सगर्भप्रमदास्तनप्रभैः समाचितं व्योम घनैः समन्ततः ।

Lustrous like a lotus blue
or diffused stratums of sooty black,
or deep blue like a pregnant woman's teats,
— the clouds have pervaded the entire sky.

२८

चातकों के कुल तृषाकुल याचना करते सतत ही
तोय अवलंबन जलद कर श्रुति मधुर ध्वनि अतिसुभगरा,
खंड शतशत धार झर झर मंद मंद मधुर गमन कर,
प्राणघन आल्हाद सीकर; आगई पावस प्रिये लो !

तृषाकुलैश्चातकपक्षिणां कुलैः प्रयाचितास्तोयभरावलम्बिनः
प्रयान्तिमन्दं बहुधारवर्षिणो बलाहकाः श्रोत्रमनोहरस्वनाः।

Thirsty chatakas[1] implore incessantly
for the cool drops of Swati[2],
Fanned by the Zephyr, with myriad streams,
the hulking clouds reverberate with pleasing notes.

1 Chataks — a bird.
2 Swati – a shower in the Swati star's duration.

२६

अशनि रव मर्दल प्रतिध्वनि इन्द्रधनु अपना उठाये
तडित की चंचल छिटकती चपल प्रत्यंचा चढाये
तीक्ष्ण धारा पतन से शर तीव्र निज रह रह चला कर
प्रवासी जन के हृदय क्षत कर रहा है नील जलधर,
गूंजती प्रतिध्वनि दिगंबर; आगई पावस प्रिये लो ?

बलाहकाश्चाशनिशब्दमर्दलाः सुरेन्द्रचापं दधतस्तडिद्गुणम्
सुतीक्ष्णधारापतनोग्रसायकैस्तुदन्ति चेतः प्रसभं प्रवासिनाम् ।

Thunder strikes like drums.
With rainbow in his hand,
Echoing his twanging bow-string of lightning flash,
And showering sharp drops of rain like piercing shafts.
The clouds rend as under the love-lorn hearts.

३०

नीलमणि वैदूर्य्य से फूटे तृणांकुर भूमितल पर
कंदली के दल सुमांसल झूलते हैं अब नवलतर
लालवीर वधूटियाँ फैली हुईं वर-अङ्गना सी
श्यामरत्नों में अवनि सज शोभनीया कल्पना सी
झूमती है री उमंग कर; आ गई पावस प्रिये लो !

प्रभिन्नवैदूर्यनिभैस्तृणाङ्कुरैः समाचिताः प्रोत्थितकन्दलीदलैः ।
विभाति शुक्लेतररत्नभूषिता वराङ्गनेव क्षितिरिन्द्रगोपकैः ॥

The grass and sedges are like
the amethyst deep,
Kandali blossoms and red - velvety
insects invade the grass.
Earth dressed in lapis lazuli tint
appears a celestial jovial dame.

३१

नवल उत्सव स्फूर्ति भर कर सतत सुंदरहर्षदायी
शबल सुंदर दीर्घ पुच्छों से सजे उत्सुक कलापी
ससंभ्रम आलिंगनों औ' चुंबनों से विकल होकर
नृत्य में होते प्रवृत्त, निहार कर नभ में पयोधर,—
कूकते रह रह उठा सिर, आगई पावस प्रिये लो !

सदा मनोज्ञं स्वनदुत्सवोत्सुकं विकीर्णविस्तीर्णकलापशोभितम्
ससंभ्रमालिङ्गनचुम्बनाकुलं प्रवृत्तनृत्यं कुलमद्य बर्हिणाम् ।

Musically Cackling peacocks
spreading their lovely long iridescent feathers,
kiss and embrace their peahens with honour
and dance with an elegant gait,
beholding clouds in the sky.

३२

लो कि अब वे भीमवेगा पंकिला नदियाँ हुमकतीं
तीर तरुओं को गिरातीं वासना से हैं उमँगतीं,
सिंधु का धर ध्यान, रत रति ध्यान में अब भागती हैं
दूर तक फैली हुई लहरें सभी को लांघती हैं,
मत्त प्रावृट् है उठा कर, आ गई पावस प्रिये लो!

निपातयन्त्यः परितस्तटद्रुमान्प्रवृद्धवेगैः सलिलैरनिर्मलैः
स्त्रियः प्रहृष्टाः इवजातविभ्रमाः प्रयान्तिनद्यस्त्वरितं पयोनिधिम् ।

The muddy rivers with enhanced vigour,
uprooting the trees from their banks,
go to their lover the Ocean
with a furious speed
like immodest wanton women.

३३

जगे तृण, अङ्कुर नये फिर फूट आये हैं सिहर कर
नये कोंपल श्याम प्रिय द्रुमराजि पर शोभा खिला कर,
हरिणियों ने नील कोने खा लिये कोमल कुतर कर
मनोहारी नव वनश्री अति मधुर प्रावृट् जगा कर
पवन में भरती सुमर्मर; आ गई पावस प्रिये लो!

तृणोत्करैरुद्गतकोमलाङ्कुरैर्विचित्रनीलैर्हरिणीमुखक्षतैः
वनानि रम्याणि हरन्तिमानसंविभूषिद्गतान्युद्गतपल्लवैर्द्रुमैः।

Beautified by green lovely grass,
and the bluish sprouting new scions
knawed at the ends by the does,
and budding trees full of tender leaves,
— The Vindhyan[1] Forest charms the heart.

1. A mountain — Vindhyachala

३४

चपल नेत्रोत्पल सुशोभित वर-वदन वे भीत मृगदल
सैकतिनि पर घूमते हैं, हृदय उत्सुकता भरे चल,
रम्य मुग्ध वनस्थली के हृदय को करता समुत्सुक
झूमता है भार जलधर; आ गई पावस प्रिये लो!

विलोलनेत्रोत्पलशोभिताननैर्मृगैः समन्तादुपजातसाध्वसैः
समाचिता सैकतिनी वनस्थली समुत्सुकत्वं प्रकरोति चेतसः।

The frightened and lovely skittish lotus-eyed deer
meanders on the sandy banks in the forests.
And lends a wistful yearning to the lustful hearts.

३५

भीम घोर गभीर गर्जन, बार बार प्रचण्ड प्रतिध्वनि
पवन झन झन, घन तिमिरमय, रात्रि में करता सननसन,
प्रिय मिलन अनुरागिणी अभिसारिकाओं को, चमक कर
तडित रेखा क्षीण, पथ दिखला रही है चपल सत्वर
एक पल बुझ पुनः जल कर; आ गई पावस प्रिये लो !

अभीक्ष्णमुच्चैर्ध्वनता पयोमुचाघनान्धकारी कृतशर्वरीष्वपि,
तडित्प्रभादर्शितमार्गभूमयः प्रयान्ति रागादभिसारिकाः स्त्रियः ।

Again and again the clouds
roar with an unbearable echoing violent force,
And winds howl in the dark blind night.
Yet a stray streak of dazzling lightning flash
indicates to the lewd dame the path to the renderbous.

३६

द्रिमिक द्रिमद्रिमनाद घोर प्रचण्ड, जलधर रोर उठती,
तडित उद्वेजित हृदय में भीति गूंज अछोर भरती,
योषिताएं शयनगृह में प्राणप्रिय को अङ्क में भर
भूलकर अपराध उनके स्नेह सुखपातीं निरंतर
गूंजती प्रतिध्वनि धरा पर; आ गई पावस प्रिये लो !

पयोधरैर्भीमगभीरनिस्वनैस्तडिद्भिरुद्वेजितचेतसो भृशम्
कृतापराधानपि योषितः प्रियान्परिष्वजन्ते शयनेनिरन्तरम् ।

Terrible and mighty thunderous roar
swells from the clouds,
And fills in the lightning - distressed-hearts
spanless unbounded echo's fright.
And young dames in their bed chambers
embrace their lovers,
forgetting their delinquencies,
as the echo throbs their hearts
with an excited zeal.

३७

नील इंदीवर सुघर से नेत्र से जलबिंदु गिरते
मधुर बिंबाधर समुज्ज्वल चारु पल्लव को भिगोते,
दूर है आभरण माला अंगराग न लेप करतीं
प्रवासी प्रमदा निराशा से घिरी हैं दुःख सहतीं
करकती स्मृतियां कसक कर; आ गई पावस प्रिये लो !

विलोचनेन्दीवरवारिबिन्दुभिर्निषिक्तबिम्बाधरचारुपल्लवाः
निरस्तमाल्याभरणानुलेपनाः स्थिता निराशाः प्रमदाः प्रवासिनाम् ।

Tears drip from the lovely, blue, lotus eyes,
And drench the tendril like rosy lips.
No more do they bedaub their bodies
with saffron and musk,
nor wear ornaments or garlands redolent,
The love lorn dames lament.

३८

देखते हैं भेक कुल संत्रस्त जिसको भीत होकर
वक्रगति चल भुजंगम सा जो लहरतामत्त आतुर,
वर्ण पाण्डुर, कीट रजतृणयुक्त नव जल, भीम रव कर
बह चला है ऊर्म्मिवह त्वर; आ गई पावस प्रिये लो!

विपाण्डुरं कीटरजस्तृणान्वितं भुजंगवद्वक्रगति प्रसर्पितम्
ससाध्वसैर्भेककुलैर्निरीक्षितं प्रयाति निम्नाभिमुखं नवोदकम्।

The frightened frogs behold with awe
the muddy roaring waters
gliding fast, with a python's gait,
yellowed by leaves and insects afloat.

३६

नवोत्पल की आस कर वे भृंगयूथ विसुध हृदय से
कभी नर्त्तनरतकलापी-पुच्छ-चक्रों में उलझते,
कभी नव-घन-स्वन-मदान्वित् वार वार चिंघारते उन
वन गजों के मदस्रवित गंडस्थलों पर झूमते क्षण
विमल उत्पलप्रभ समझ कर; आ गई पावस प्रिये लो !

विपत्रपुष्पां नलिनीं समुत्सुका विहाय भृंगाः श्रुतिहारिनिस्वनाः
पतन्ति मूढाः शिखिनां प्रनृत्यतां कलाचपक्रेषु नवोत्पलाशया ।
वनद्विपानां नववारिदस्वनैर्मदान्वितानां ध्वनतां मुहुर्मुहुः
कपोलदेशा विमलोत्पलप्रभाः सभृङ्गयूथैर्मदवारिभिश्चिताः ।

In vain expectations of new lotus blooms
the humming black bees
sometimes get entangled into the circuitously spread
iridescent feathers of the dancing peacocks,
or horer around the pungent juice
trickling from the lotus hued temples of huge elephants,
they that peel again and again with upraised trunks,
delighted by the roaring mirth of the clouds.

४०

वे नवल कमलाभ नीले घन उपल पर सतत गिरते
सतत चुंबन कर मधुर निर्झर निरंतर स्रवित झरते,
नृत्यरत होते कलापी विकल होते भीम भूधर
स्पर्श से तन में सिहर भर; आ गई पावस प्रिये लो!

नीलोत्पलाभाम्बुदचुम्बितोपलाः समाचिताः प्रस्रवणैः समन्ततः
प्रवृत्तनृत्यैः शिखिभिः समाकुलाः समुत्सुकत्वं जनयन्ति भूधराः।

New lotushued blue clouds
Constantly shower down
and delicately kiss the stones and rivurlets flow.
Peacocks dance and mightly mountains enrapture
the hearts with a thrill.

४१

अश्वकर्ण, कदम्ब, अर्जुन, केतकीवन कर विकंपित
सजलघनकण स्पर्श करके हुआ शीतल, सुरभि गंधित
मुखर वर्षासमीरण उत्सुक नहीं देता किसे कर
पुलक दोला पर झुला कर; आ गई पावस प्रिये लो !

कदम्बसर्जार्जुनकेतकीवनं विकम्पयंस्तत्कुसुमाधिवासितः
सशीकराम्भोधरसङ्गशीतलः समीरणः कं न करोति सोत्सुकम् ।

Shaking the Ketaki, Arjuna,[1] Kadamba[1]
and Aswakarna[1] forests,
laden with cool drops from the heavy clouds,
Fragrant soothing winds of the rainy days
carry the hearts with their swinging quiver.

1. Trees.

४२

नितम्बों तक लहरते हैं घुंघरवाले चिकुर चंचल
पीन उन्नत स्तन स्फुरित हैं, वदन में मधु गंध विह्वल,
कुसुम के गंधित सुरम अवतंस अपने गौर तन धर
कामियों में रति जगातीं योषिताएं मन रिझा कर,
रूप विद्युत जगमगा कर, आ गई पावस प्रिये लो!

शिरोरुहैः श्रोणितटावलम्बिभिः कृतावतंसैः कुसुमैः सुगन्धिभिः
स्तनैः सुपीनैः वदनैः ससीधुभिः स्त्रियो रतिं संजनयन्ति कामिनाम्।

Long curly tresses reach the hips,
The round plump breasts of women throb,
sweet smelling are their mouths.
And wearing fragrant flower garlands
on their snow-white figures
damsels enchant the youthful hearts.

४३

चपल विद्युत्, इंद्रधनु भूषित नवल जल भार झुकते,
रत्नकुण्डल, दीप्तरशना, पीनस्तन नतभार करते,
मेघ औ' प्रमदा नयन में कांपत हैं एक छविभर,
शोभनीय मनोज्ञ मनहर; आ गई पावस प्रिये लो !

तडिल्लताशक्रधनुर्विभूषिताः पयोधरास्तोयभरावलम्बिनः
स्त्रियश्च काञ्चीमणिकुण्डलोज्ज्वला हरन्ति चेतो युगपत्प्रवासिनाम् ।

The lightning flash and the rainbow
bedeck the lowering clouds,
Bejewelled earrings and lustrous girdle
adorn the damsels with heavy breasts.
With a singular beauty they awe the admiring eyes.

४४

नव बकुल, मृदुकेतकी, प्रिय गंधपूर्ण कदम्ब लेकर
योषिताएं गूंथ माला धारती हैं अब सिरों पर
कान पर इच्छानुकूल सजा ककुभ-द्रुम-नवल-कालिका
कुसुम चयनों में सकल अवतंस रचती हैं सुरसिका,
गंध का आमोद भर कर; आ गई पावस प्रिये लो !

मालाः कदम्बनवकेसरकेतकीभिरायोजिताः शिरसि बिभ्रतियोषितोऽद्य
कर्णान्तरेषु ककुभद्रुममञ्जरीभिरिच्छानुकूलरचितानवतंसकांश्च ।

On their lovely heads young women
wear the garlands of flowers plucked
from Vakul,[1] Ketaki[1] or fragrant Kadamba.[1]
With new buds of Kakubha[1] they adorn their ears,
and bedeck themselves with flowers to
their heart's content.

1. Trees

४५

गंध कालागुरु-प्रचुर, चंदनमधुरतन लेप कर कर
चिकुर रेशम से सुकोमल, पुष्प भूषण सुरभि जर्जर,
गुरुजनों के कक्ष तज, शैय्याभवन में हृदय आतुर
योषिताएं रात्रि में घननाद सुन, जातीं चपलत्वर,
कामना अपनी जगाकर; आ गई पावस प्रिये लो !

कालागुरुप्रचुरचन्दनचर्चिताङ्ग्यः
पुष्पावतंससुरभीकृतकेशपाशाः
श्रुत्वा ध्वनिं जलमुचां त्वरितं प्रदोषे
शय्यागृहं गुरुगृहात्प्रविशन्ति नार्यः ।

Besmearing their bodies with sweet smelling
Kalaguru[1] and sandal,
with silken hair perfumed by frankincense,
and adorned by flowers fragrant and sweet
young damsels with swift feet leave their elders' rooms,
and go to their lovers with desirous hearts
when the thunder claps resound in the sky.

1. An incense.

४६

नील कुवलय सा मनोरम नम्र जल भर, घुमड उन्नत्त,
मृदु पवन आघात से चल मंद्र मंद्र सुसांद्र गुंजित,
इन्द्रधनु ले मेघ चलता, पथिक वधुओं को विकल कर,
प्रिय वियोगाकुल हृदय को छीन लेता विवश सा कर,
रूप का शृंगार जलधर; आ गई पावस प्रिये लो !

कुवलयदलनीलैरुन्नतैस्तोय नम्रै —
मृदुपवनविधूतैर्मन्दमन्दं चलद्भिः।
अपहृतमिव चेतयस्तोदैः सेन्द्रचापैः
पथिकजन वनधूत द्वियोगाकुलानाम् ।।

Rising high yet laden with vapour,
moving slowly in the sky famed by the otoise breeze,
Blue lotus hued cloud with the rainbow's lustre
snatches away the hearts of the lovelorn brides.

४७

नव सलिल से तापश्रांत वनान्त हर्षित झूमता है
आज नव आनंद फूट कदम्ब तरु पर झूलता है,
पवन से शाखा विकंपित, प्रति कुसुम नव हर्ष आतुर
केतकी के रोम विकसे खिल उठा कान्तार हँस कर,
नाचते हैं मोर मनहर; आगई पावस प्रिये लो !

मदित इव कदम्बैर्जात पुष्पैः समन्ता—
तपवनचलितशाखैः शाखिभिर्नृत्यतीव,
हसितमिव विधत्ते सूचिभिः केतकीनां
नवसलिलनिषेकच्छिन्नतापो वनान्तः ।

The summer scorched forest is thrilled with joy
at the touch of new showers,
A new pleasure sprouts on the Kadamba trees,
and every branch shakes in a gaiety unexplained,
Every flower of Ketaki is blossomed
as if the forest has laughed,
And peacocks dance with a crepitate joy.

४८

कान्त सुंदर विसुध वधुएं मालती गुंथ कर बकुल में
धारतीं माला बना कर नव कुसुम शृंगार सिर में
मागधी के प्रिय मुकुल विकसित सुमन नव रूप भरते
और फुल्ल कदम्ब बन अवतंस कानों पर लटकते,
देख श्यामल नील जलधर; आ गई पावस प्रिये लो !

शिरसि वकुलमालां मालतीभिः समेतां
विकसित नवपुष्पैर्यूथिकाकुड्मलैश्च,
विकचनवकदम्बैः कर्णपूरं वधूनां
रचयति जलदौघः कान्तवत्काल एषः ।

Beholding the beautiful cloud
lovely damsels adorn their braids
with garlands of Vakul interlaced with malati
and new blossomed flowers of delicate magadhi.[1]
And now are swinging full grown Kadamba flowers
on their ears.

1. Creepers

पीन उन्नत कुचाग्रों पर हार मोती के थिरकते,
सुघर दीर्घ नितंब पर सित सूक्ष्मपट चंचल लहरते,
नव्य जल कण स्पर्श से प्रिय रोमराजि पुलक उठी है—
ललित त्रिवलीभङ्ग पर उन नारियों के हँस उठी है,
मध्यदेश प्रसन्न सुखकर, आगई पावस प्रिये लो !

दधति वरकुचाग्रैरुन्नतैर्हार यष्टिं
प्रतनुसित दुकूलान्यायतैः श्रोणिबिम्बैः,
नवजलकणसेकादुद्गतां रोमराजीं
ललितवलिविभङ्गैर्मध्यदेशैश्च नार्यः।

Pearl necklaces quiver on the teats
of the round plump breasts of women.
White gauzy garments wave on their heavy and
lovely rumps.
New showers send a thrill in the line of hair
on the trivali[1] of Vindhyan damsels.

1. Three folds of skin on the abdomen.

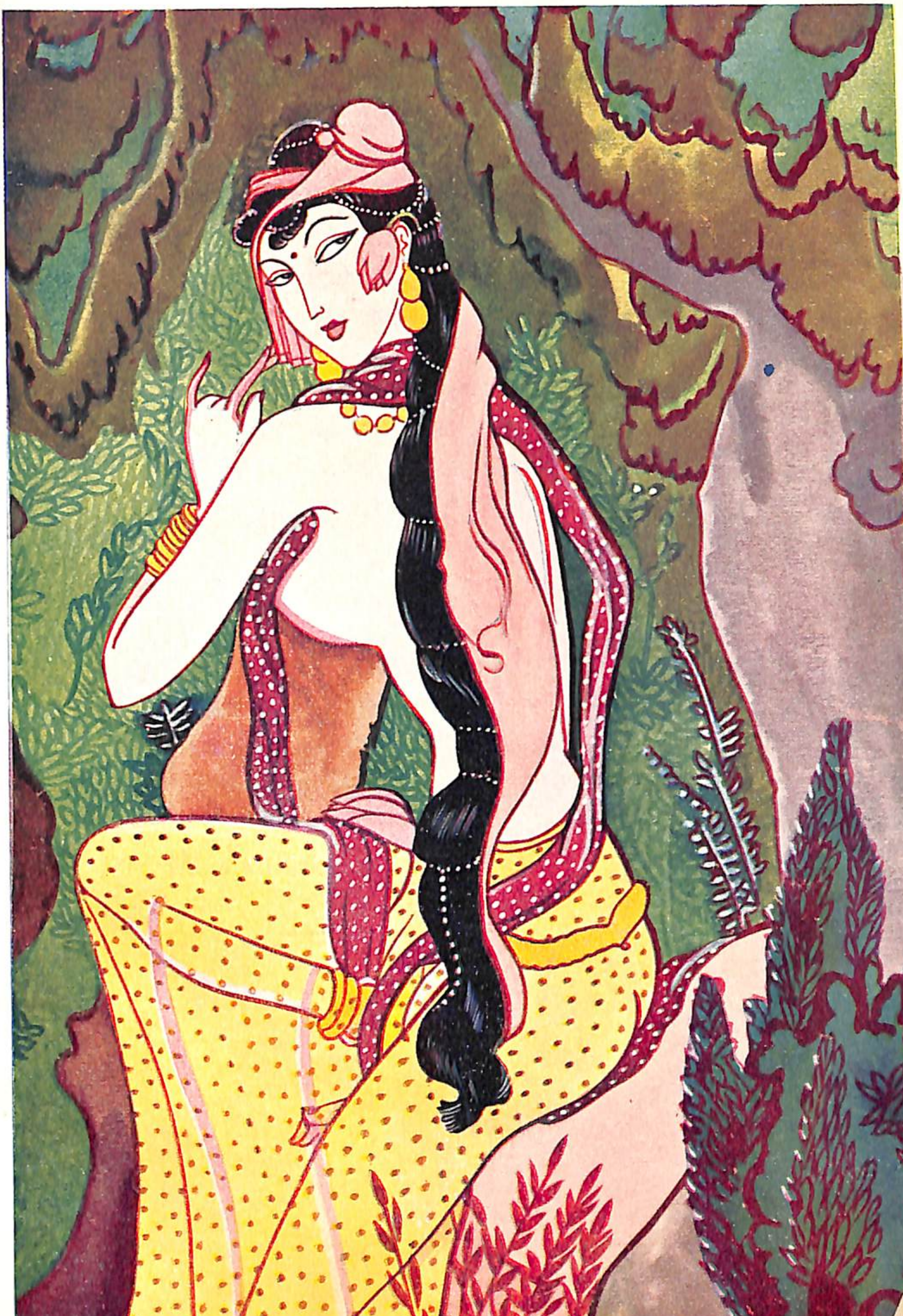

५०

कुसुम-भार-विनम्र लासक वृक्ष की मृदु गंध से भर,
बिंदु नूतन अंबु के छू हो गया शीतल सिहर कर,
केतकी की सुरभिवाही मृदुलरज को घ्राण में भर,
प्रोषिताओं के हृदयको पावन लेता है सतत हर,
पीत-परिमल तृप्त मनहर; आगई पावस प्रिये लो !

नवजलकणसङ्गाच्छीततामादधानः
कुसुमभरनतानां लासकः पादपानाम्
जनितरुचिर गन्धः केतकीनां रजोभिः
परिहरति नभस्वान् प्रोषितानां मनांसि ।

Cooled by the touch of fresh drops of water,
And perfumed by the flower laden fragrant Lasak trees
Aye ! scented sweet by the Ketaki pollen,
the pleasing wind enraptures the lovelorn womne.

५१

दग्ध परुष प्रचंड भीषण ग्रीष्म की ज्वाला शिखा से
उच्चशिर वह विंध्य जलदायी-जलद-आधार सारे
धार लेता सघन-जलभर-विनत-घन को नम्र होकर
एक आश्रय वन, सतत आल्हादमय निज ताप खोकर,
ग्लानि अंगों की मिटा कर; आगई पावस प्रिये लो !

जलधर विनतानामाश्रयोऽस्माकमुच्चै—
रयमिति जलसेकैस्तोयदास्तोयनम्राः
अतिशयपुरुषाभिर्ग्रीष्मवह्नेः शिखाभिः
समुपजनिततापं ह्लादयन्तीव विन्ध्यम् ।

Scorched by the summer's terrific heat,
the shelter of clouds, mighty Vindhya with joy,
courteously holds the heavy clouds
on his high and proud head.

५२

निर्विकार सुबंधु प्रेमी तरु विटप तृण वल्लरीका,
कामिनी प्रिय हृदयहारी, अगनगुण रमणीय, नीला—
मेघ वर्षा काल का, दाता सतत सब ईप्सितों का,
नवल जीवन प्राणभूत समान है वह प्राणियों का,
गरज उठता रोर भर कर, आगई पावस प्रिये लो !

बहुगुण रमणीयः कामिनीचित्तहारी
तरु विटपलतानां बान्धवो निर्विकारः
जलदसमय एष प्राणिनां प्राणभूतो
दिशतु तव हितानि प्रायशो वाञ्छितानि ।

Friend of trees and foliage,
the charmer of women's hearts,
multi-virtuous, immutably bounteous,
Life of all life, Rainy season has come.

तृतीयः सर्गः
शरद्

CANTO 3
SARADA

५३

प्रिये ! आई शरद लो वर !
मधुर विकसित-पद्म-वदनी कास के अंशुक पहनकर,
मत्त मुग्ध मराल कलरव मञ्जु नूपुर सा क्वणित कर,
पकी सुन्दर शालियों सी देह निज कोमल सजा कर
रूप रम्या शोभनीया नववधू सी सलज अन्तर
प्रिये ! आई शरद लो वर !

काशांशुका विकच पद्म मनोज्ञवक्त्रा
सोन्मादहंसरव नूपुरनाद रम्या
आपक्व शालिरुचिरातनुगात्रयष्टिः
प्राप्ता शरन्नव वधूरिव रूप रम्या ।

Blooming lotus-faced, wearing fine clothes of reeds,
Adorning her ripe - paddy - like beautiful body,
with tinkling nupurs like sweet cackling of swans,
Darling ! Sarada comes like a modest bride.

५४

कास कुसुमों से मही औ' चंद्र किरणों से रजनि को
हंस से सरिता सलिल औ' कुमुद से सरवर सुरम को,
कुसुम भार विनीवसप्तच्छदों से उन वनांतों को
मालती के विकल फैले प्रिय सुमन से उपवनों को—
शुक्ल करती, प्रतिदिशा में दीप्ति फैला अमल शुचितर,
प्रिये ! आई शरद लो वर !

काशैर्मही शिशिर दीधितिना रजन्यो
हंसैर्जलानि सरितां कुमुदैः सरांसि
सप्तच्छदैः कुसुमभारनतैर्वनान्ताः
शुक्लीकृतान्युपवनानि च मालतीभिः ।

Whitening the earth with flowers of Kash.[1]
And the night with sweet moonbeams,
the river waters with swans, the ponds with lotus blooms,
The forests with flower - laden - Saptachchhadas,[2]
And the gardens with Malati,
Sweetheart ! Sarada brightens the sequel.

1. Reeds.
2. A tree. Every stem has seven leaves in it.

५५

चटुल शफरी सुभग काञ्ची सी मनोरम दीखती है
हंस श्रेणी धवल बैठी निकट मुक्ताहार सी हैं,
वे नितंबों से सुमांसल पुलिन विस्तृत हैं रुचिर तर
एक प्रमदा सी नदी होती प्रवाहित मंद मंथर,
प्रिये आई शरद लो वर!

चञ्चन्मनोज्ञशफरी रसना कलापाः
पर्यन्तसंस्थितसिताण्डज पङ्क्तिहाराः
नद्यो विशाल पुलिनान्तनितम्बबिम्बा
मन्दं प्रयान्ति समदाः प्रमदा इवाद्य ।

Swift nimble fishes are the girdle,
The Swan-string on the banks is the necklace of pearls,
And the beautiful banks are the heavy rumps,
slowly the river flows like a woman enraptured.

५६

रिक्त जल अव रजत शङ्ख
मृणाल से सित गौर उज्ज्वल
खंड शतशः व्याप्त दिशि दिशि
पवन वाहित शुभ्र बादल
व्योम-नृप का व्यजन करते
चमर शत शत ज्यों लहर कर,
प्रिये आई शरद लो वर !

व्योम क्वचिद्रजतशङ्खमृणालगौरै
स्त्यक्ताम्बुभिलघुनया शतशः प्रयातैः
संलक्ष्यते पवनवेग चलैः पयोदै
राजेव चामर वरैरुपवीज्यमानः ।

Waterless clouds are white silvery bright
like lotus stalks or conch shells.
Borne by the breeze the multi-scattered clouds
fan the sky-king like flapping whisks.

५७

प्रभिन्नाञ्जन दीप्ति से
अतिकान्तिमय है व्योम सारा
अरुण है बंधूक जैसी
वसुमती हो पुष्पभारा,
कमलवन आच्छादित—
सरसी पुलकती है सदय लो
कर नहीं देते समुत्सुक
रूप यह किसके हृदय को ?
प्रिये ! आई शरद वर लो !

भिन्नाञ्जनपचय कान्ति नभो मनोज्ञं
बंधूकपुष्परचितारुणता च भूमिः
वप्राश्च चारुकमलावृतभूमिभागाः
प्रोत्कण्ठयन्ति न मनो भुवि कस्य यूनः ।

Devoid of blackness the entire sky is radiant,
The flower laden earth is of Bandhook[1] hue,
Lotus blooms have pervaded the ponds,
Oh whom do they not enchant?

1. Red flower

५८

मदिर मंथर चल मलय से
अग्रशाख विकंप आकुल
प्रचुर पुष्पोद्गम मनोहर
चारुतर ले नर्म कोंपल,
मत्त भ्रमरों ने पिया
मद प्रस्रवण-हो विकल जिस पर
मधुर चमरिक वृक्ष चित्त
विदीर्ण किसका दें नहीं कर,
प्रिये आई शरद लो वर !

मन्दानिलाकुलितचारु, तराग्रशाखः
पुष्पोद्गमप्रचयकोमल पल्लवाग्रः
मत्तद्विरेफपरिपीतमधु प्रसेक-
श्चित्तंविदारयति कस्य न कोविदारः।

With quivering branches in the slow moving breeze,
Laden with flowers and tendrils soft,
with juice-drunk black bees humming sweet,
The chamarik tree rends asunder the hearts.

५६

सुभग ताराभरण पहने
मुक्त घन-अवरोध से अब
चंद्रवदनी, अमल ज्योत्स्ना
के दुकूलों में रुचिर सज
मुग्ध प्रमदा यामिनी
संवर्धिता है प्रति दिवस त्वर,
प्रिये आई शरद लो वर !

तारागणप्रवरभूषणमुद्वहन्ती
मेघावरोधपरिमुक्तशशांकवक्त्रा
ज्योत्स्नादुकूलममलं रजनी दधाना
वृद्धिं प्रयात्यनुदिनं प्रमदेव बाला।

Wearing bright stars,
shedding off cloud-veils,
Moon faced, in garments of the sweet moon beams,
The damsil-night is gay and juvenescent.

६०

घर्षिता है वीचिमाला
    मुखों से कारण्डवों के
तीर भू आकुल हुई
    कलहंस औ' सारसकुलों से,
कमल के मकरंद से
    आरक्त शैवलिनी मनोहर,
हंस-रव से जन-हृदय में
    प्रीति को जाग्रत रही कर,
    प्रिये आई शरद लो वर !

कारण्डवाननविघट्टितवीचिमाला:
    कादम्बसारसकुलाकुलतीरदेशा:
कुर्वन्ति हंसविरुतैः परितो जनस्य
    प्रीतिं सरोरुहरजोरुणितास्तटिन्य: ।

The waters are disturbed by the Karandava[1] beaks,
The banks are crowded with sweet swans and cranes,
The river is reddened by lotus pollen,
And the cackling of swans arouses the feeling of love.

1. Swan like bird.

६१

रश्मि जालों को बिछा
आल्हाद भरता जो हृदयहर,
नयन उत्सव, हिम फुही झर,
इंदु भी है अब कठिनतर,
पति-विरह-विष-सिक्त-शर-क्षत
नारियों को ताप दुखकर,
प्रिये आई शरद लो वर !

नेत्रोत्सवो हृदयहारिमरीचिमालः
प्रह्लादकः शिशिरशीकरवारिवर्षी
पत्युर्वियोगविषदिग्धशरक्षतानां
चन्द्रो दहत्यतितरां तनुमङ्गनानाम् ।

Pleasing to the eyes the moon spreads a network of beams
And sprays cool rays, now hard to stand.
Lovelorn damsels, afflicted by the poisoned dart of
desertion, lament.

६२

फल भरानत शालियों को
कर विकंपित गुंज भर कर
लदे फूलों से झुकी
द्रुम राजि को रह-रह नचा कर
पवन उन उत्फुल्ल पकंज
से ढँके जल को हिलाकर
नलिनियों में सिहर भरता,
झूमकर हँसता मुखर हो,
तरुण हृदयों को मथित कर,
विकल कर अत्यंत चल लो !
प्रिये आई शरद वर लो !

आकम्पयन्फलभरानतशालिजाला—
न्यानर्तयंस्तरुवरान्कुसुमावनम्रान् ।
उत्फुल्लपंकजवनां नलिनीं विधुन्व—
न्यूनां मनश्चलपति प्रसभं नभस्वान् ।

Shaking the ripe water rice plants with a murmuring note,
Sending a rythmic quiver in the flower-laden trees,
Ringing on the blooming lotus pervaded ponds
and thrilling the lotus petals and waters cool,
the cool breeze squelches the youthful hearts.

६३

मत्त हंस मिथुन विचरते
स्वच्छ फुल्लाम्भोज खिलते
मन्द गति प्रातः पवन से
वीचियों के जाल हिलते
ज्योति में अवदात वे सर
हृदय हर लेते अवश कर,
प्रिये आई शरद लो वर!

सोन्मादहंसमिथुनैरुपशोभितानि
स्वच्छप्रफुल्लकमलोत्पलभूषितानि।
मन्द प्रभातपवनोद्गतवीचिमाला
न्युत्कण्ठयन्ति सहसा हृदयं सरांसि।

Delighted pairs of swans roam in the forests,
and fresh lotus flowers bloom,
slowly the morning breeze vibrates the waters,
Aye ! The ponds spell unexplained charms.

बल विनाशन इन्द्र धनु अब
गर्भ में घन के नहीं है,
पताका - सौदामिनी का
स्फुरण वह चंचल नहीं है,
अब बलाका - पंख से
होता पवन कंपित न क्षण भर
देखते न मयूर नभ को
शीश निज ऊपर उठा कर,
प्रिये ! आई शरद लो वर !

नष्टं धनुर्बलभिदो जलदोदरेषु
सौदामिनी स्फुरति नाद्य वियत्पताका।
धुन्वन्ति पक्षपवनैर्न नभो बलाकाः
पश्यन्ति नोन्नतमुखा गगनं मयूराः।

No more the Bala-[1] Slayer Rainbow appears in the cloud,
No more the lightning standard pulsates in the dark,
Neither the Balaka[2]-wings stir the air,
nor the peacocks stare at the sky with their raised hads.

1. Bala—an Asura father of Vritra. Indra killed him.
Rainbow is supposed to be the bow of Indra – the God of Rains.
2. A bird-white, with long wings.

नृत्यहीन मयूर तज कर,
हंस कलरव से प्रमुद मन,
ककुभ, नीप, कदम्ब, शाल,
तज़े, कुटज तज, काम प्रतिक्षण
फुल्लकुसुमित नव्य श्रीयुत्,
सप्तपर्णों पर चरण धर,
ग्रहण करता है वरासन,
स्थान यों अपने बदल कर,
प्रिये आई शरद लो वर !

नृत्यप्रयोगरहिताञ्छिखिनो विहाय
हंसानुपैति मदनो मधुरप्रगीतान् ।
मुक्त्वा कदम्बकुटजार्जुनसर्जनीपा
न्सप्तच्छदानुपगता कुसुमोद्गम श्रीः ।

Cupid deserts the peacock's feathers
and steps amidst singing swans
leaving Kakubha[1] Nipa[1] Kadamba[1] Shaal[1] and
. Kutaja[1] trees,
puts his foot on the beautiful flower laden Saptaparna.[1]
Thus changes his abode.

1. Trees.

६६

व्याप्त करके सुरभि कुसुमों की
सलज शेफालिका से,
स्वस्थस्थित कोकिल कुलों के
प्रतिध्वनित कूजन गुंजा के,
हरिणियों के कमल नयनों—
उपवनों की श्री जगाकर,
काम हरता है हृदय अब
लोक को उत्सुक चपल कर,
प्रिये आई शरद लो वर!

शेफालिकाकुसुमगन्धमनोहराणि
स्वस्थस्थिताण्डजकुलप्रतिनादितानि ।
पर्यन्तसंस्थितमृगीनयनोत्पलानि
प्रोत्कण्ठयन्त्युपवनानि मनांसि पुंसाम् ।

Pervading the sweet fragrance of lovely Sephalika[1]
Echoing the pleasing gardens with Kokil notes,
And with lotus eyed meandering does,
Cupid enchants all men.

1. a flower

६७

बार बार सुवर्ण सौगंधिक,
नलिन औ' कैरवों को
कंप से भर, अधिक होकर
शीतलित छू जल कणों को
धार कोमल पल्लवान्तों
पर लुढकते ओस कण को
कर रहा प्रातः समीरण
सतत उत्कण्ठित हृदय को,
प्रिये आई शरद वर लो !

कह्लारपद्मकुमुदानि मुहुर्विधुन्वं
स्तत्संगमादधिकशीतलतामुपेतः
उत्कण्ठयत्यतितरां पवनः प्रभाते
पत्रान्तलग्नतुहिनाम्बुविधूयमानः ।

Quaking the golden, white and red lotus flowers
cooled by the waters,
Bearing the morning dew from the tender leaves
The breeze of the dawn soothes the hearts.

६८

जलसिंचे मृदु शालियों से
वसुमती आच्छादिता रे,
स्वस्थस्थित गो कुल विचरते
बहुल चरते औ' रँभाते,
हंस सारस प्रतिध्वनित
भरते सतत हैं मञ्जु कल स्वर,
प्रिये आई शरद लो वर !

संपन्नशालिनिचयावृतभूतलानि
स्वस्थस्थितप्रचुरगोकुलशोभितानि
हंसैः ससारसकुलैः प्रतिनादितानि
सीमान्तराणि जनयन्ति नृणां प्रमोदम् ।

The earth is covered by the tender well irrigated paddy,
Happy herds of cows graze and bellowing roam,
Cranes and swans flock together and cackle in sweet notes.

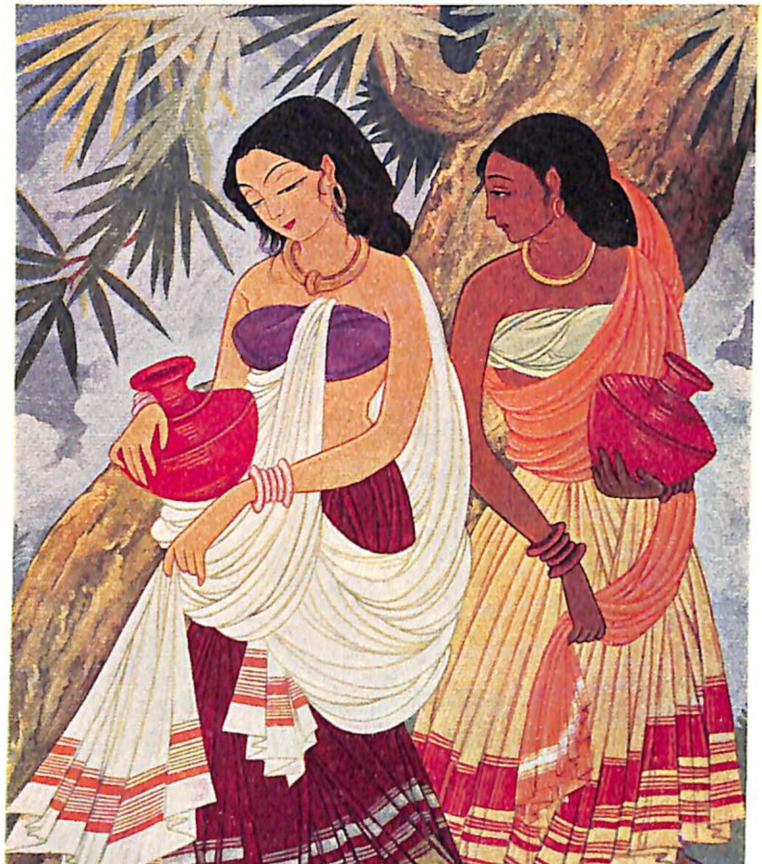

६६

अङ्गनाओं की ललित गति जीतते हैं हंस सुंदर,
इंदुमुख की कांति, होकर कमल विकसित ले चले हर,
नील नयनों के विलोकन आ गये इंदीवरों में,
कुटिल विभ्रम बंक भ्रू के कांपते प्रिय तरंगों में,
कुसुमभारानत लता श्यामा छिपी जो पल्लवों में,
साभरण मृदु बाहुओं की कांति हर लेती क्षणों में,
चारुस्मित अवदात-दन्ताभास को कङ्कोलि हरता,
चंद्रकान्ति मनोज्ञ का मुख नव्य मालति में पुलकता,
रूप का शृंगार जीवन रागिणि में भर रहा स्वर!
प्रिये आई शरद लो वर!

हंसैर्जिता सुललिता गतिरङ्गनानामम्भोरुहैर्विकसितैर्मुखचंद्रकान्तिः
नीलोत्पलैर्मदकलानि विलोचनानिभ्रूविभ्रमाश्च रुचिरास्तनुभिस्तरंगैः।
श्यामा लताः कुसुमभारनतप्रवालाः स्त्रीणां हरन्ति धृतभूषणबाहुकांतिम्
दन्तावभासविशदस्मितचन्द्रकान्तिं कङ्केलिपुष्परुचिरा नवमालती च।

Victorious swans have snatched away the beauty of the damsels' gait
Their moon-face-loveliness is now in the lotus blooms,
The charm of the eyes has gone to the blue lotus flowers
The curve of the brows has slipped into nipples gay.
The flower laden Shyama-creeper half hidden in the leaves
wins over the damsels' arms adorned with ornaments,
And Kankoli steals the smile-beautifying-glitter of the teeth
The lustre of the moon throbs in the malati.

७०

ललित वनिता मालती के
नवल कुसुमों को उठातीं
सघन घुंघराले सुकोमल
नील केशों को सजातीं
हेम कुण्डल लोल कानों
में मचलते दीप्तिभर कर
नील कमलों को झुलातीं
संग उनके विविध छविधर
प्रिये आई शरद लो वर !

केशान्नितान्तघननीलविकुञ्चिताग्रा—
नापूरयन्ति वनिता नवमालतीभि:
कर्णेषु च प्रवरकाञ्चनकुण्डलेषु
नीलोत्पलानि विविधानि निवेशयन्ति ।

Charming damsels adorn their curly blue hair
with malati's fresh flowers,
And on their ears now beside their gold rings
swing the blue lotus flowers.

७१

सजल मुक्ताहार चंदनलिप्त
स्तन पर डोल हिलते
विपुल रम्य नितंब अब
रशना क्वणन से हैं पुलकते
हृष्टमन से चपल वनिता
चल रही हैं रे हृदय हर,
चरण कमलों में रणन
मञ्जीर क्षण-क्षण भर उठे स्वर,
प्रिये आई शरद लो वर !

हारैः सचन्दनरसैः स्तनमण्डलानि
श्रोणीतटं सुविपुलं रसनाकलापैः
पादाम्बुजानि कलनूपुरशेखरैश्च
नार्यः प्रहृष्टमनसोऽद्य विभूषयन्ति ।

Pearl strings quake on the Sandal smeared breasts
Lovely rumps are thrilled at the girdle's tinkling
Happily young women walk
and Nupuras[1] ring on the lotus feet at every step.

1. an ornament for the ankles.

७२

विगत घन नभ में बिखर कर चंद्रतारा जगमगाते
कुमुद आच्छादित सरों में बिंब उनके झलमलाते
राजहंस मनोज्ञ कलरव तीर पर करते पुलक कर,
और मरकतवर्णजल शोभा रुचिर करते थिरक कर,
रूपशालिनि श्री उतरती है तरंगों में विसुध कर,
प्रिये आई शरद लो वर !

स्फुटकुमुदचितानां राजहंसाश्रितानां
मरकतमणिभासा वारिणा भूषितानाम्
श्रियमतिशयरूपां व्योम तोयाशयानां
वहति विगतमेघं चन्द्रतारावकीर्णम् ।

Brightly shine the moon and stars in the clear sky
their reflection quivers in the lotus pervaded ponds,
Royal swans sing on the banks,
Lovely waters are of refulgent emerald hue.

७३

कैरवों के संग से अब है अनिल शीतल प्रवाहित
शुद्ध हैं नीलम दिशाएं मेघ जालों से अबाधित,
शुष्क पङ्का वसुमती पर विमल जल है स्फटिक सुंदर,
बिखर उपगन विचित्र तारा व्योम में हँसते दमककर,
विमल किरणें शांत अब बरसा रहा अमृत सुधाकर
प्रिये आई शरद लो वर !

शरदि कुमुदसङ्गाद्वायवो वान्ति शीता
विगतजलदवृन्दा दिग्विभागा मनोज्ञाः
विगतकलुषमम्भः श्यानपङ्का धरित्री
विमल किरणचंद्र व्योम ताराविचित्रम् ।

The breeze is cooled by the touch of lotus blooms,
clear is the cloudless sky bright blue,
Devoid of mires the earth has crystal clear waters
Bright is the moon and the stars in the sky are resplendent.

७४

कमल कर ले, चंद्रजितमुख
तरुणियां कुसुमाभरण रच,
कांत कर गह, शांति में
एकांत में जातीं विसुध उर,
मदन का बल प्रबल निज
तारुण्य में रखती संजोकर,
प्रिये आई शरद लो वर !

कर कमल मनोज्ञा: कान्तसंसक्त हस्ता
वदनविजितचन्द्रा: काश्चिदन्यास्तरुण्य:
रचित कुसुमगन्धि प्रायशो यान्ति वेश्म
प्रबलमदनहेतौ सूक्त सङ्गोक्तरम्या: ।

With lotus in hand, wearing fragrant flower wreaths
lovely damsels with faces that vanquish the moon,
tread into lonely qnarters lustfully
hand in hand with their lovers.

७५

सुरत रुचि निज वर युवतियां
संग सखियों के मनोहर,
मुखर अनुगत, रे नितंबिनि
मृदुविलासिनि स्मित सलजधर
प्रगट करतीं कामशर के
तीव्र भेद विनोद सुख कर,
प्रिये आई शरद लो वर !

सुरतरुचिविलासाः सत्सखीभिः समेता
असमशरविनोदं सूचयन्तिप्रकामम्
अनुगतमुखराभिः श्रोणिमध्ये विनोदं
शरदि तरुणकान्ताः सूचयन्ति प्रमोदान् ।

In sarada, heavy-hipped and smiling deep,
Lustful young damsels fond of Cupid's game
out spoken and shy
relate the mysteries of voluptuous sports—
to their hand-maids.

७६

सुन्दरी की वदन छवि ले
भोर में पङ्कज पुलकते
सूर्य्य के सुकुमार कर छू
अरुण दृग चंचल सिहरते,
चंद्रबिंब विलीन होता
अस्त, कुमुदिनि मौन झुक कर,
प्रोषिता वधु सी हसित वह
दीनमन है क्लांत कातर,
प्रिये ! आई शरद लो वर !

दिवसकर मयूखैर्बोध्यमानं प्रभाते
वरयुवतिमुखाभं पङ्कजं जृम्भतेऽद्य
कुमुदमपि गतेऽस्तं लीयते चंद्रबिम्बे
हसितमिव वधूनां प्रोषितेषु प्रियेषु ।

The touch of the morning rays of the Sun awakens the lotus like a young woman's face. Now sets the moon and Kumudini[1] laments sneered it like a love lorn bride.

---

1. a flower, water lily

७७

नील नयना श्री मनोहर
उत्पलों में देख जाग्रत,
कनक-रशना-हंस-कल-स्वर-
मत्त करता क्वणन झंकृत,
देखकर बंधूक में प्रेयसि
अधर-छवि रे उजागर
भ्रान्त उर रोते पथिक जन
सुख अतीतों का स्मरण कर,
प्रिये आई शरद लो वर!

असितनयनलक्ष्मीं लक्षयित्वोत्पलेषु
क्वणितकनककाञ्चीं मत्तहंस स्वनेषु
अधररुचिरशोभां बन्धुजीवे प्रियाणां
पथिकजन इदानीं रोदिति भ्रान्तचित्तः।

Beholding the beauty of the blue eyes in the lotus blooms
And the lustre of the lips in the Bandhook flowers,
In the sweet swan-cackle hearing the girdle's tinkling,
Travellers weep and lament, remembering their joys of yore.

हंस कूजन निज रणित
मणि नूपुरों में छोड़ सुन्दर,
कान्तिमय बंधूक छवि को
रुचिर अधरों पर सजा कर,
चंद्रशोभा सुन्दरी तरुणी-
वदन में अब निहित कर,
शरद-श्री सुभगा चली
अन्यत्र अन्तर्धान होकर,
प्रिये आई शरद लो वर !

स्त्रीणां विहाय वदनेषु शशांकलक्ष्मीं
काम्यं च हंसवचनं मणिनूपुरेषु
बन्धूककान्तिमधरेषु मनोहरेषु
क्वापि प्रयाति सुभगा शरदागमश्रीः ।

So, leaving her swan's cackle
in the tinkling bejewelled nupuras
And in the lips securing the Bandhook's lustre
Now placing moon's glory in the woman's face
the Sarada beauty departs.

७६

फुल्ल सरसिज आनना, अति
रुचिर शोभिनि कुमुद वर्णा,
नव्य विकसित काश के सित
वस्त्र पहने, कमल नयना,
शरद ऋतुमद आतुरा चल
कामिनी सी मंदस्मित धर,
प्रीति अग्रिम चित्त में
देती जगा है भ्रू चला कर,
प्रिये आई शरद लो वर !

विकचकमलवक्त्रा फुल्लनीलोत्पलाक्षी
विकसितनवकाशश्वेतवासो वसाना
कुमुदरुचिरकान्तिः कामिनीवोन्मदेयं
प्रतिदिशतु शरद्वश्चेतसः प्रीतिमग्र्याम् ।

Lotus hued, Blooming lotus faced
lotus eyed, smiling benevolently
wearing the white reed-robes
Lovely Sarada awakens love in hearts,
with mirthful eye-brows like a damsel young.

चतुर्थ सर्गः
हेमंत

CANTO 4
HEMANTA

८०

लो प्रिये हेमंत आया !

नव प्रवालोद्‌गम कुसुम प्रिय, लोध्र पुष्प प्रफुल्ल सुंदर,
पके शाली, तुहिन हत हो पद्म खोये मलिन होकर,
किंतु कुंकुम राग रञ्जित अब विलासिनि पनिस्तन हैं,
रूपशालिनि वक्ष पर अब कुंद इंदु तुषार सित हैं
हार मोती के रहे हिल, नयन में उल्लास छाया,
लो प्रिये हेमंत आया !

नवप्रवालोद्‌गमसस्यरम्यः प्रफुल्ललोध्रः परिपक्वशालिः
विलीनपद्मः प्रपतत्तुषारो हेमन्तकालः समुपागतोऽयम् ।
मनोहरैश्चन्दनरागगौरैस्तुषारकुन्देन्दुनिभैश्चहारैः
विलासिनीनां स्तनशालिनीनां नालंक्रियन्ते स्तनमण्डलानि ।

Charming is the florescence and fresh flowers sprout
Paddy is ripe and beauteous lodhra blossoms.
Lotus blooms have faded struck by the cold touch
of snow
And lustful round breasted damsels
adorn their plump curves with kumkum,
Pearl necklaces whiter than frost
quiver on their teats
sweet heart ! now Hemanta has come.

८१

बाहुयुग्मों पर विलासिनि
के वलय अङ्गद नहीं हैं,
नवदुकूल न नितंबों पर
कमल-श्री पद में नहीं है,
पीन उन्नत स्तनों पर
अंशुक नहीं वे सूक्ष्म दिखते,
हेम रत्न प्रदीप्त मेखल
से नितंब न और सजते,
नूपुरों में हंस रव
बजता न पग पग पर गुंजाया
लो प्रिये हेमंत आया !

न बाहुयुग्मेषु विलासिनीनां प्रयान्ति सङ्गं वलयाङ्गदानि
नितम्बबिम्बेषु नवं दुकूलं तन्वंशुकं पीनपयोधरेषु,
काञ्चीगुणैः काञ्चनरत्नचित्रैर्नो भूषयन्ति प्रमदा नितम्बान्
न नूपुरैर्हंसरुतं भजद्भिः पादाम्बुजान्यम्बुजकान्तिभाञ्जि ।

No more are bracelets bright on the arms of women
nor lovely raiments on their rumps exist,
nor gauzy vests cup their well shaped breasts,
And lotus beauty is no more in their feet,
Bejewelled girdles of gold apart no more
their lustre to their lovely lips,
Aye ! The jingling, nupuras have lost
their swan's lovely cackling at every step,
as they are no more on their feet.

८२

लिप्त कालीयक तनों पर
सुरत उत्सव का प्रसाधन,
मुखकमल पर दिख रहा
कस्तूरिका का पत्र लेखन,
चिकुर कालागुरु सुगंधित-
धूप से, यों तन सजाया
लो प्रिये हेमंत आया।

गात्राणि कालीयकचर्चितानि
सपत्रलेखानि मुखाम्बुजानि
शिरांसि कालागुरुधूपितानि
कुर्वन्ति नार्यः सुरतोत्सवाय।

Cupid's festival enthralls the hearts of women,
with kaliyaka they besmear their persons,
and paint their fair lotus faces with musk,
and perfume their tresses with kalaguru fumes.

८३

सुरत श्रमसे पाण्डु कृश मुख हो चले, नव रूप धर कर,
तरुण कामी पा रहे हैं हर्ष का उत्कर्ष मनहर,
दशन से क्षत ओष्ठ पीडित हो गये हैं केलि करते
इसलिये वे उच्चहास विमुक्त होकर हैं न करते
रति चतुरस्त्री ने उसे मुस्कान में अपनी छिपाया,
लो प्रिये हेमंत आया !

रतिश्रमक्षामविपाण्डुवक्त्राः
संप्राप्तहर्षाभ्युदयास्तरुण्यः
हसन्ति नोच्चैर्दशनाग्रभिन्ना
न्प्रपीड्यमानानधरानवेक्ष्य ।

Deep indulgence in Cupid's game
has exceeded its limits,
Lo, now young and lovely faces
are pale and wan with undue exultation.
Toils of love have left the lips so bitten,
that the damsel accomplice in youthful secrecy
laughs not aloud for fear of pain
in the lips.

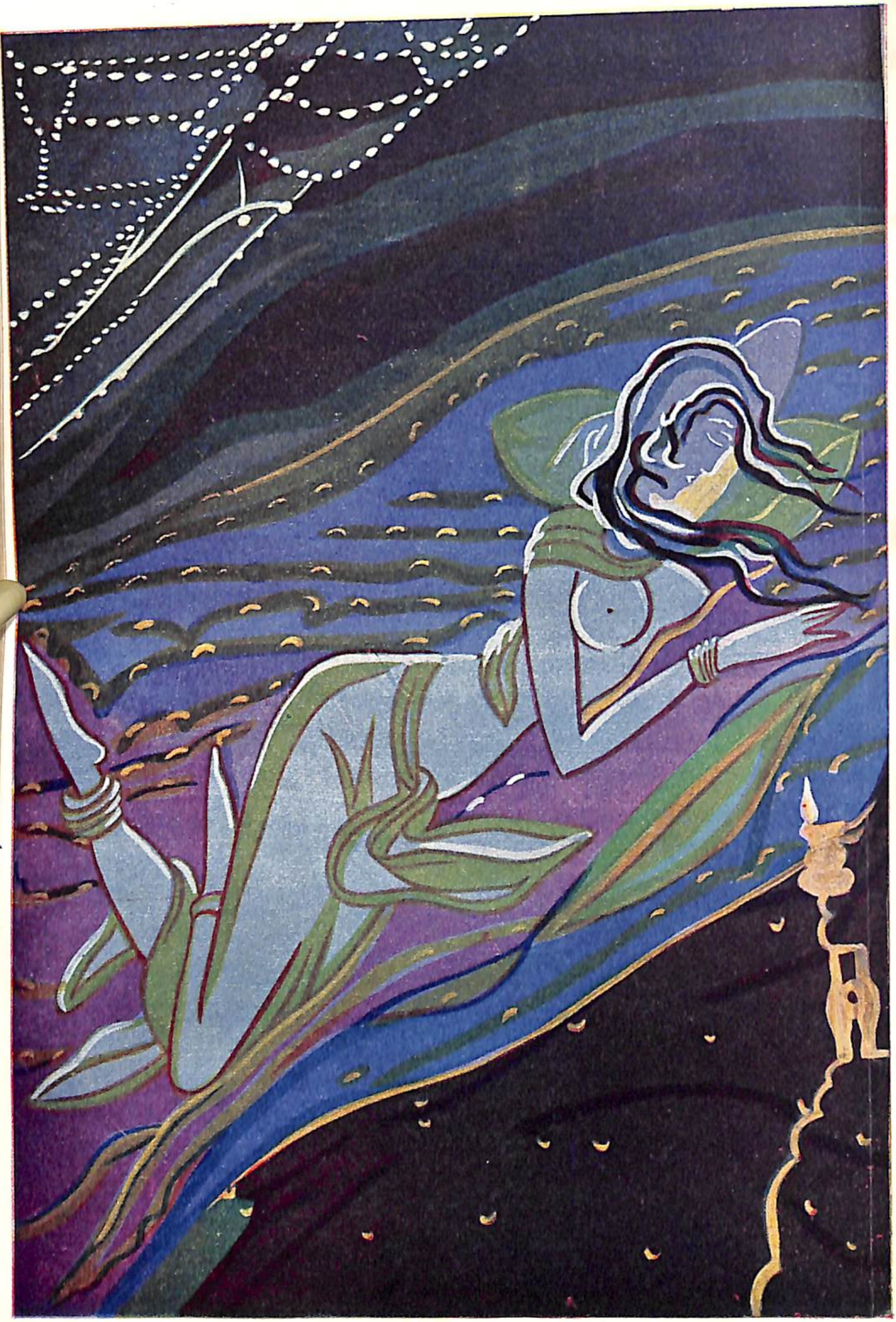

८४

शोभनीय सुडौल स्तन का
नैशः अतिमर्दन हुआ है
अतः मन में शीत के
कुछ खेद सा आतुर हुआ है
भोर पत्तों के किनारों
पर तुहिन जो दिख रहा है
अश्रु हैं हेमंत उर के,
पर-व्यथा ने है रुलाया,
लो प्रिये हेमंत आया !

पीनस्तनोरः स्थलभागशोभा-
मासाद्य तत्पीडनजातखेदः
तृणाग्रलग्नैस्तुहिनैः पतद्भि
राक्रन्दतीवोषसि शीतकालः।

The whole night ripe round breasts
have been crushed with a wild delight,
winter's heart laments the damsels plight.
Bright snow drops on the edges of leaves in the dawn
are the tears of his sorrow for others' grief.

८५

व्याप्त प्रचुर सुशालि धान्यों
से हुआ रमणीय सुंदर,
हिरनियों के झुंड से
शोभित हुआ अब अवनि प्रान्तर
अति मनोहर क्रौञ्च के
कलनाद से गुंजित मनोहर
दूर सीमान्तर ललित तक
एक जादू सा रिझाया,
लो प्रिये हेमंत आया !

प्रभूतशालिप्रसवैश्चितानि
मृगाङ्गनायूथविभूषितानि
मनोहरक्रौञ्चनिनादितानि
सीमान्तराण्युत्सुकयन्ति चेतः ।

Pervaded by plentiful paddy the forest
looks lovelier,
Herds of doe meander to and fro and add to the beauty,
The sweet cackling of krounchas floats in the air and
and travels far beyond the beyond.

८६

नीलइंदीवर खिले हैं, मत्त कलरव हंस करते,
शीत स्वच्छ प्रसन्न सर में तैरते हैं हृदय हरते,
प्रिये ! गौर तुषार छूकर सिहरती ठंडे पवन से
प्रिय विरहिणी लता दीन प्रियंगुकी कंपित सततेर
विलासिनी नित पाण्डु होती जा रही है, दुख समाया,
लो प्रिये हेमंत आया !

प्रफुल्लनीलोत्पलशोभितानि, सोन्मादकादम्बविभूषितानि
प्रसन्नतोयानि सुशीतलानि, सरांसि चेतांसि हरन्ति पुंसाम् ।
पाकं व्रजन्ती हिमजातशीतैराधूयमाना सततं मरुद्भिः
प्रिये प्रियङ्गुः प्रियविप्रयुक्ता विपाण्डुतां याति विलासिनीव ।

Blue lotus flowers bloom on the waters
Snow-white swans echoing their enchanting songs
float on the crystal clear water of the ponds.
Sweetheart ! the lovely Priyangu creeper love-lorn
is pale and worn
and incessantly shivers at the touch of the
frost cold winds.

८७

प्रोषिता मृगनयनिपथ को देखती है आह भरकर
अश्रु गिरते, स्मृति रुलाती, सोचती है चाह भर कर
पुष्प-आसव-मोद-गंधित-वदन ले, उस ओर मद भर
श्वास से सुरभित तनों को परस्पर आतुर मिला कर
काम रस से व्याप्त प्रेमी सो रहे, सब कुछ भुलाया,
लो प्रिये हेमंत आया !

मार्गं समीक्ष्यातिनिरस्तनीरं प्रवासखिन्नं पतिमुद्वहन्त्यः
प्रवेक्ष्यमाणा हरिणेक्षणाक्ष्यः प्रबोधयन्तीव मनोरथानि
पुष्पासवामोदसुगंधिवक्त्रो निःश्वासवातैः सुरभीकृताङ्गः
परस्पराङ्गव्यतिषङ्गशायी शेते जनः कामरसानुविद्धः

Lovelorn women, there, gaze at the lover's paths
Tears trickle down, memory sighs and
the hearts bemoan,
And here in ardent deep embraces of warm delight
The lovers sleep in erotic ecstasy drunk;
Their scented breaths are perfumed with liquor sweet,
distilled from the sweetest flowers.

८८

दन्त क्षत से अधर व्याकुल,
                    तरुण मद से नयन घूर्णित,
मीन कुच कर सघन मर्दित
                    लेप सब करते विचूर्णित,
अङ्गना-तन में सुरत ने
                    मधुर निर्दय भोग पाया,
          लो प्रिये हेमन्त आया !

दन्तच्छदैः सव्रणदन्तचिन्हैः
                    स्तनैश्च पाण्यग्रकृताभिलेखैः ।
संसूच्यते निर्दयमङ्गनानां
                    रतोपभोगो नवयौवनानाम् ।

Kissbites bruise the lips,
The eyes are full of intoxication's joy
cruel crushing of round breasts
          removes all powders and leaves the
          scratches of finger nails
young damsels wear the amorons toils'
          impressions on their young bodies.

८९

वालकिरणें भोर में जव सूर्य्य की होतीं उदय रे
मुकुर करले कमल-मुख को ललित वनिताएं सदय रे
अधर पर निज कांत के दन्तच्छदों को देखती हैं;
पी लिया सब सार ऐसे होंठ को हँस हेरती हैं;
और कोई सघन-निशि-भर-सुरत-श्रम से खिन्न काया,
रात्रि भर, कर जागरण, पाटल-कमल-दृग-रक्त-छाया,
मुक्त लुटरी नग्न कंधों पर लहरती चिकुर माया,
सूर्य की मृदु रश्मियों ने ताप दे उसको सुलाया,
लो प्रिये हेमन्त आया !

काचिद्विभूषयति दर्पणसक्तहस्ता बालातपेषु वनिता वदनारविन्दम्
दन्तच्छदं प्रियतमेन निपीतसारं दन्ताग्रभिन्नमवकृष्य निरीक्षते च।
अन्या प्रकामसुरतश्रमखिन्नदेहा रात्रिप्रजागरविपाटलनेत्रपद्मा
स्रस्तांसदेशलुलिताकुलकेशपाशा निद्रां प्रयाति मृदुसूर्यकरभितप्ता॥

When the warm rays of the winter's sun
descend on the earth
Some lovely women with mirrors in hands
Scrutinize their deep sucked kissbitten lips,
and laugh with a silent joy.
And some with tired bodies after night long
lustful cupid's sports
With sleepy eyes for want of slumber, rosy red
sleep in the soft warmth of the rising sun
with open shoulders covered by luxuriant hair.

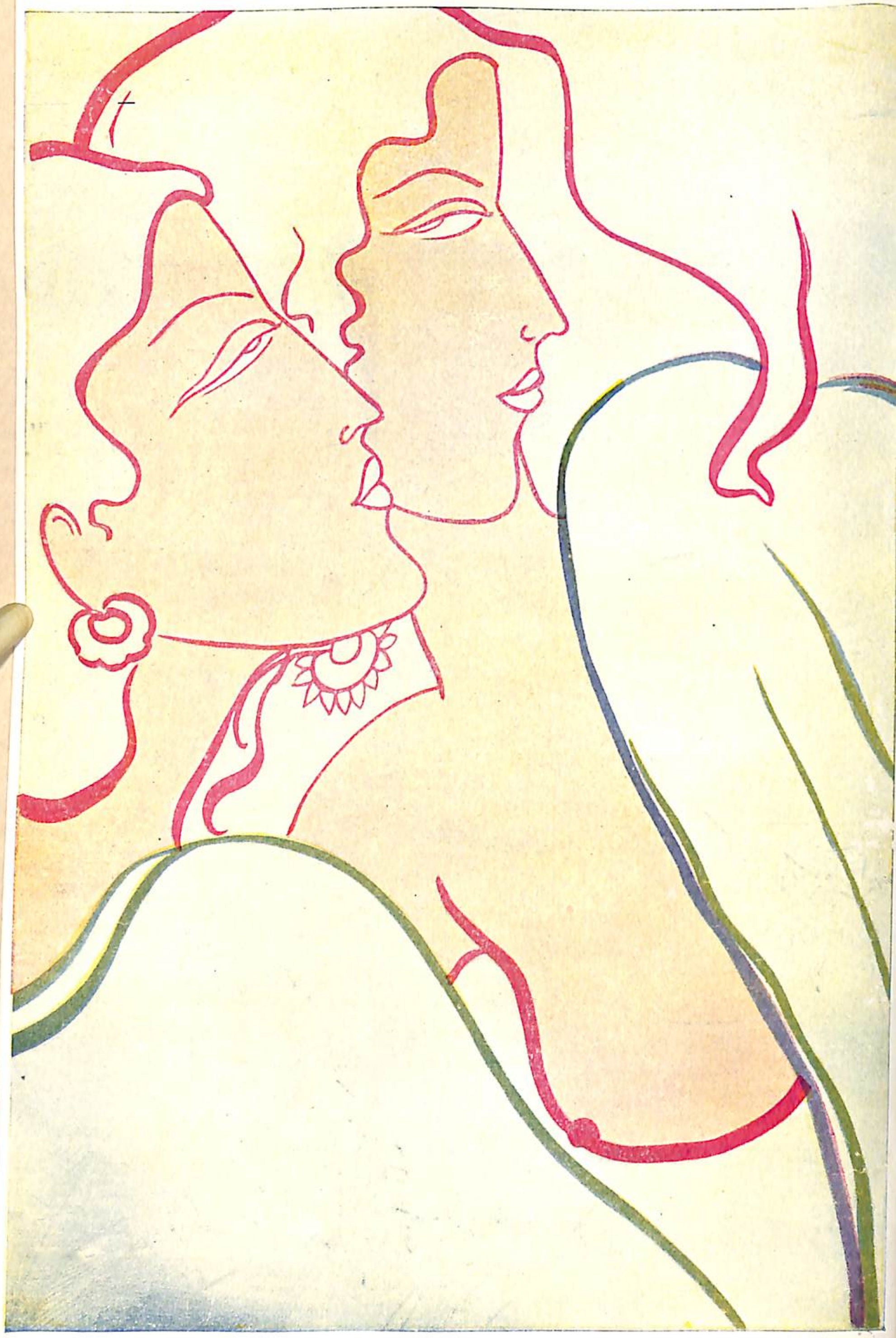

६०

पीन उन्नतस्तनों से नमिता युवति कोई उमँगतीं
गत-सुरभि निमार्ल्यमाला शीश से अपने हटातीं
नील मृदु अलकें चपल निज केश रचना कर सजातीं,
और कोई रात भर प्रिय-मुक्त-तन को देख हर्षित
अधर पर मुस्कान लेकर चारु शोभा पुनः अर्पित
नखक्षताङ्गी, दीर्घकेशिनि लोल-नयना-स्नेह-मुखरित
अंगवस्त्र चढ़ा रही, स्तनभार लो क्षण में छिपाया
लो प्रिये हेमन्त आया !

निर्मल्यदाम परिभुक्तमनोज्ञगन्धं मूध्नोंऽपनीय घननीलशिरोरुहान्ताः ।
पीनोन्नतस्तनभरानतगात्रयष्ट्यः कुर्वन्ति केशरचनामपरास्तरुण्यः ।।
अन्या प्रियेण परिभुक्तमवेक्ष्य गात्रं हर्षान्विता विरचिताधरचारुशोभा ।
कूर्पासकं परिदधाति नखक्षताङ्गी व्यालम्बिनीलललितालककुञ्चिताक्षी ।।

Bowed with heavy breasts now swollen and warm
some young women dress their tresses;
they remove the garlands of faded flowers
from their blue curly hair.
And others with modest gaiety look
at their love enjoyed bodies and smile.
With wanton eyes they cover in the vests
their breasts bruised by their lover's finger nails.

६१

चिर सुरत कर केलि श्रमश्लथ
शिथिल सालस गात अपने
स्फुरित जंघा औ' स्तनों से
पुलक मुखरित हर्ष अपने
तैल अंगों पर लगातीं
स्निग्ध करतीं हेमकाया,
लो प्रिये हेमन्त आया !

अन्याश्चिरं सुरतकेलिपरिश्रमेण
खेदं गताः प्रशिथिली कृतगात्रयष्ट्यः।
संहृष्यमाणपुलकोरुपयोधरान्ता
अभ्यञ्जनं विदधति प्रमदाः सुशोभाः॥

Drowsy with the exertion of night's amorous sports
Languid and tired are their bodies
Hence with joyous content
young damsels massage their pulsating breasts
and throbbing thighs with perfumed oil.

६२

पके प्रचुर सुधान्य से
सीमांत ग्रामों के घिरे हैं
सतत सुंदर, क्रौञ्च
माला से गले जिसके पड़े हैं
अगनगुण रमणीय, प्रमदा—
चित्रहारी, शीतकाया,
तुहिनमय, हेमन्त सुख
देता सभी को, स्नेह छाया,
लो प्रिये हेमन्त आया !

बहुगुणरमणीयो योषितां चित्तहारी
परिणतबहुशालिव्याकुलग्रामसीमा ।
सततमति मनोज्ञः क्रौञ्चमालापरीतः
प्रदिशतु हिमयुक्तः काल एषः सुखं वः ॥

Ripe rich paddy pervades the countryside.
Beautiful krounchas[1] are the pearls of his necklace;
multivirtuous and lovely, victor of damsels' hearts
Sweetheart ! Hemanta showers benefaction on all.

1. birds.

पंचम सर्गः
शिशिर

CANTO 5
SISIRA

६३

प्रिये शीतल शिशिर आई,
हे वरोरु ! प्रवृद्ध देखो
शालियों औ' ईख से अब
ढँक गई सुन्दर धारा है
कहीं होता क्रौञ्च कलरव,
उग्रकामी, योषिताप्रिय—
काल है, बेला सुहाई,
प्रिये शीतल शिशिर आई !

प्ररुढशालीक्षुचयावृतक्षिति
क्वचित्स्थितक्रौञ्चनिनादराजितम् ।
प्रकामकामं प्रमदाजनप्रियं
वरोरु कालं शिशिराह्वयं शृणु ।।

Abundant paddy pervades the earth brightly.
Krounchas cackle sweetly at places,
Oh ! Smooth thighed enchantress !
Bitter winter has come,
winter, the desire of lustful youth
and young women's delight.

६४

बंद वातायन गृहों के, अग्नि ही अब सूर्य्य लगता,
पहन भारी वस्त्र करती लोक सेवा युवति अबला।
शीत शशि की रश्मियां, चंदन, स्फटिक की हर्म्य छत वे,
शरद ज्योत्स्ना, सान्द्रशीतल तुहिन कणमय चल पवन रे,
कुछ नहीं अब कुछ नहीं है, याद सब सुनी हुई है,
सघन शीत तुषार गिरता चंद्र छवि पीली हुई है,
पाण्डु होकर नखत कँपते, रात्रि वेला दु:खदाई,
प्रिये शीतल शिशिर आई !

निरुद्धवातायनमन्दिरोदरं हुताशनो भानुमतो गभस्तय:
गुरूणि वासांस्यबला: सयौवना: प्रयान्ति कालेऽत्र जनस्य सेव्यताम्।
न चन्दनं चन्द्रमरीचिशीतलं न हर्म्यपृष्ठं शरदिन्दुनिर्मलम्
न वायव: सान्द्रतुषारशीतला जनस्य चित्तं रमयन्ति सांप्रतम्।
तुषारसंघातनिपातशीतला: शशाङ्कभाभि: शिशिरीकृता: पुन:
विपाण्डुतारागणचारुभूषणा जनस्य सेव्या न भवन्ति रात्रय:।

Closed are the shutters and fire serves for the sun
in the abodes.
Wearing heavy garments
young women satisfy their lovers with a great delight.
Nights are sooty devoid of moonbeams;
That Sandal fragrance, those harem terraces
Aye, they are no more in vogue to please,
nor pleases the biting cold wind any more.
Thick snowfalls, chill bites and burns,
chilled is the moon now pale and hazy
Dim stars shiver in the distant dark,
Nocturnal happiness is closed in doors;
Painful are the nights.

६५

ऊष्म-लेपों को लगा, ताम्बूलमाला ग्रहण करके
कमल नयनी अब मुदित हो प्रिय सुखासव पान करके
प्रचुर कालागुरु सुरभिमय धूप सेवन सतत करके
समुत्सुक हो शयनगृह को चल पड़ीं सीत्कार करके,
योषिताएं भीतहृदया कंत के अपराध अनगिन
बार बार सकंप करतीं रोष से जो सतत तर्जन,
सुरत अभिलाषिणि बनीं सब बात वह पिछली भुलाई
प्रिये शीतल शिशिर आई !

गृहीतताम्बूलविलेपनस्रजः पुष्पासवामोदितवक्त्रपङ्कजाः
प्रकामकालागुरुधूपवासित विशन्ति शय्यागृहमुत्सुकाः स्त्रियः ।
कृतापराधान्बहुशोऽपितर्जितान्सवेपथून्साध्वसलुप्तचेतसः
निरीक्ष्य भर्तॄन्सुरताभिलाषिणः स्त्रियोऽपराधान्समदा विसस्मरुः ।

Chewing fragrant betels, anointing sweet perfumes,
Having drunk with pleasure sweet wine,
wearing flower garlands and scented with kalaguru fumes,
the lotus-eyed damsels enter their bed-chambers
With anxious lust.

With anger lapsing into forgiveness
young damsels forget their frightened lovers'
oft chided numerous faults,

With nymphomania they smile with a joy.

तीव्रकाम विलास की अभिलाष से निशि-दीर्घ सह के
सुखद निर्दय सुरत क्रीडा केलिश्रम खेदित हृदय से
रात्रि के अवसान में जातीं स्त्रियां मंथर चरण चल।
रक्त प्रिय कौशेय सुंदर पहन, केशों में कुसुम कल
धार, कूर्पासक मुघर में बांधती है विकल निज स्तन
रूपमय शृंगार करती हिमागम में ले पुलक तन।
पीत केशर और कुंकुम से रंगे स्तन, पुलक यौवन—
ऊष्मामय, विकल पीडित, कामियों को दे मधुर सुख
मुक्त सोतीं, या कि गंधित श्वास से कर कमल कंपित
रात्रि में निज कामियों के संग ले मदनीय सुरभित
काम रति को जगाती मदिरा, प्रहृष्टा युवतियां वे
ढाल पीतीं और मोहित छीन लेतीं सुछवियां वे।
गात में ऊष्मा पुलकती अवहिमागम में लुभाई,
प्रिये शीतल शिशिर आई !

प्रकामकामैर्युवभिः सुनिर्दयं निशासु दीर्घास्वभिरामिताश्चिरम्
भ्रमन्ति मन्दं श्रमखेदितोरवः क्षपावसाने नवयौवनाः स्त्रियः।
मनोज्ञकूर्पासकपीडितस्तनाः सरागकौशेयकभूषितोरवः
निवेशितान्तः कुसुमैः शिरोरुहै विभूषयन्तीव हिमागमं स्त्रियः।
पयोधरैः कुङ्कुमरागपिञ्जरैः सुखोपसेव्यैर्नयौवनोष्मभिः
विलासिनीभिः परिपीडितोरसः स्वपन्ति शीतं परिभूय कामिनः।
सुगन्धिनिश्वासविकम्पितोत्पलं मनोहरं कामरतिप्रबोधकम्
निशासु हृष्टाः सह कामिभिः स्त्रियः पिबन्ति मद्यं मदनीयमुत्तमम्।

With lustful desire they bore the cruel Cupid's sports—
throughout the night and now with tired limbs
young damsels in the wake of dawn
stroll out of their bed chambers.

In scarlet silken robes they adorn themselves
lovely flowers they wear on their hair,
and cover their breasts in cotton vests.
Or sleep in winter nights with lovers sweet
in deep embraces, painting their breasts with
keśhara[1] and kumkum[2].
Or shaking the lotus flowers with fragrant breaths
they drink with their lovers, sweet scented wine,
exciting the lovers' passionate zeal.

1. Saffron
2. Red powder or paint.

९७

मिट गया मद राग, कोई योषिता है प्रात वेला
कृत निविड कुच कोर पिय आलिंगनों से, काम खेला,
भुक्त प्रियतम से हुई निज देह को तब देखती सी
शयन गृह तज कामिनी जातीं लजाती-सी विहँसतीं।
अगर सुरभित धूप मोदित केशपाशों से मनोहर
स्रस्त हैं अब कुसुममाला, केशपाशों को हटाकर
गुरुनितंबिनि क्षीण कटि कमनीय शोभा से रिझातीं
शयनगृह को कामिनी गत यामिनी कर त्याग जातीं।
सद्य जल से धौत सुंदर हेमकल्हर झूमते हैं
कानतक लोचन गुलाबी बिंबलेकर पहुँचते हैं
और कंधों पर लहरते बालरेशम से मृदुल रे
उषा में गृहमध्य में साक्षात् लक्ष्मी रूप धरके
योषिताएं दीखती हैं दीप्त आभा में समाई,
प्रिये शीतल शिशिर आई !

अपगतमदरागा योषिदेका प्रभाते कृतनिविडकुचाग्रा पत्युरालिङ्गनेन
प्रियतमपरिभुक्तं वीक्षमाणा स्वदेहं व्रजति शयनवासाद्वासमन्यंहसन्ती।
अगुरुसुरभिधूपामोदितं केशपाशं गलितकुसुममालं कुञ्चिताग्रं वहन्ती
त्यजति गुरुनितम्बा निम्ननाभिःसुमध्या उषसिशयनमन्या कामिनी चारुशोभा।
कनककमलकान्तैः सद्य एवाम्बुधौतैः श्रवणतट निषक्तैः पाटलोपान्तनेत्रैः
उषसि वदनबिम्बैरंससंसक्तकेशैः श्रियइव गृहमध्ये संस्थिता योषितोऽद्य।

Lo, a damsel with fading paints,
casts glances on her swollen teats, paining with hard
embraces compressed,
and beholds her body used by her lover's lust
smilingly leaves the bed chamber modestly.

With perfume pपair and old flower wreaths,
removing the curly hair from her face,
some heavyhipped woman enchanting the hearts
leaves the bed and goes outside in the
end of the night.
The waking beauty with fresh golden lotus blooms
on their ears,
long eyes rosy, and playing locks of perfumed hair,
sits refreshed in the home like shree herself golden bright.

९८

विपुल उरु के भार से सुख-आर्त आनत-मध्य-सुंदरि
रे सघनस्तन भार से कुछ नमित चलतीं मंद मंथर
सुरत बेला-वेश-ऊबा में तुरंत उतार कर अब
अन्यवस्त्रों को पहनकर तरुणियां देखो रहीं सज,
या कि नखक्षत व्याप्त स्तन के अग्रछोरों को निरखतीं
अधर किसलयछोर पर उन दंतक्षत का स्पर्श करतीं
हृदय पूरित लालसा रस से मुदित मोहित युवतियां
भोर में करतीं पुनः शृंगार, विकसित नव्य छवियां।
अरुण गालों की गुलाबी केमतक में झलमलाई,
प्रिये शीतल शिशिर आई !

पृथुजघनभरार्ताः किंचिदानम्रमध्याः
स्तनभर परिखेदान्मन्दमन्दं व्रजन्त्यः
सुरतसमयवेषो नैशमाशु प्रहाय
दधति दिवसयोग्यं वेषमन्यास्तरुण्य
नखपदचितभागान्वीक्षमाणाः स्तनाग्रा—
नधरकिसलयाग्रं दन्तभिन्नं स्पृशन्त्यः
अभिमतरसमेतं नन्दयन्त्यस्तरुण्यः
सवितुरुदयकाले भूषयन्त्याननानि ।

Bowed in the middle with heavy thighs,
moving slowly with heavy paining breasts,
damsels change in the morning
their night dresses,
or cast glances on their teats and nail scratched breasts,
or behold their kiss bitten lips and
delicately feel with their fingers' touch.
With a delight of fulfilled amorous ecstasy,
they dress themselves in the thrilling warmth
of the morning sun.

९६

मिष्ट गुड से पूर्ण, सुंदर
धान्य ईख सुस्वादु धारक
प्रवल सुरत-सुकेलि से
कदर्प दर्प प्रदीप्त कारक,
प्रियजनों से दूर हृदयों
को सतत संतापदायक,
शिशिर काल मनोज्ञ हो !
इस लोक का कल्याणवाहक,
स्निग्धकञ्चन गात ! आयत
लोचने ! नव ज्योति छाई !
प्रिये शीतल शिशिर आई !

प्रचुरगुडविकारः स्वादुशालीक्षुरम्यः
प्रबलसुरत केलिर्जात कंदर्पदर्पः
प्रियजनरहितानां चित्त संतापहेतुः
शिशिर समय एष श्रेयसे वोऽस्तु नित्यम् ।

Full of Sweet Gur, and plentiful paddy and
sugarcane,
the exciter of cruel cupid's sports,
the tyrant to lovelorn hearts,
Winter, be the be ıefactor of all.

षष्ठम सर्गः

वसंत

CANTO 6

VASANTA

१००

प्रिये मधु आया सुकोमल
तीक्ष्ण सायक—आम्र बौर—
प्रफुल्ल की कर में उठाये
भ्रमरमाला की मुखर
अभिराम प्रत्यञ्चा चढाये
सुरत शर से हृदय को
करता विदग्ध विदीर्ण व्याकुल
प्रिये ! वीर वसंत योद्धा
आगया मदपूर्ण चंचल
प्रिये मधु आया सुकोमल

प्रफुल्लचूताङ्कुरतीक्ष्णसायको
द्विरेफमालाविलसद्धनुर्गुणः
मनांसि वेद्धुं सुरतप्रसङ्गिनां
वसन्तयोद्धा समुपागतः प्रिये ।

With sharp shafts of mango-blossoms in his hand,
and the bow-string of humming black beas,
Aye ! rending asunder the heart with love-darts,
Sweet heart ! Warrior spring has come.

१०१

द्रुम कुसुममय, सलिल
सरसिजमय हुए, सुखपूर्ण यामिनि
पवन गंधित, रम्य रे दिन
कामरुचिमय युवति कामिनि;
वापियों के वारि में
मणि मेखला का रूप भरता
इन्दु छवि स्त्री को, कुसुम दे
आम्र तरुओं को पुलकता
दे रहा सबको वसन्त
नवीन जीवन लालसा कल,
प्रिये मधु आया सुकोमल !

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः
सुखाः प्रदोषा दिवसाश्चरम्याः सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते।
वापीजलानां मणिमेखलानां शशाङ्कभासां प्रमदाजनानाम्
चूतद्रुमाणां कुसुमान्वितानां ददाति सौभाग्यमयं वसन्तः।

Donating new flowers to trees, lotus blooms to ponds,
Beauty to nights, and fragrance to the breeze,
Loveliness to days, and voluptuous
lust to the damsels,
Rendering girdle's-luster to the quivering ripples,
Sweet moon's resplendence to the woman's face,
And blossom's thrill to the mango trees,
Spring comes bestowing new life to all.

मृदु तुहिन से शीतकृत हैं
हर्म्य, चंपक सुरभिमयशिर
योषिताएँ डालतीं उर
पर कुसुम के हार मनहर
रक्त वर्ण कुसुम्भ से
सुंदर दुकूल नितम्ब पर हैं
और कुंकुम राग के
अंशुक स्तनों पर अति रुचिर हैं
विलासिनियां कान पर नव
कर्णिकार लगा रही हैं
सघन नीले चल अलक में
अब अशोक सजा रही हैं
मल्लिका नव फुल्ल, नूतन
कान्ति देती है समुज्ज्वल।
प्रिये मधु आया सुकोमल!

ईषत्तुषारैः कृतशीतहर्म्यः सुवासितं चारु शिरः सचम्पकैः
कुर्वन्ति नार्योऽपि वसंतकाले स्तनं सहारं कुसुमैर्मनोहरैः।
कुसुम्भरागारुणितैर्दुकूलै र्नितम्बबिम्बानि विलासिनीनाम्
रक्तांशुकैः कुङ्कुमरागगौरैरलंक्रियन्ते स्तनमण्डलानि।
कर्णेषु योग्यं नवकर्णिकारं चलेषु नीलेष्वलकेष्वशोकम्
पुष्पं च फुल्लं नवमल्लिकायाः प्रयाति कान्तिं प्रमदाजनानाम्।

The harems are cooled by the mist,
Fresh champaka[1] lends fragrance to the
heads of women,
And damsels wear garlands of lovely flowers,
On their hips are scarlet kusumbha[2] skirts,
And kumkum hued vests cover their breasts,
Lustfully they adorn their ears with karnikara[3],
And curly long bluish tresses with Asok,[4]
New blossoms of mallika[5] add to their beauty
beyond reproach.

1. a flower.
2. a tree—but here it means red coloured. It is also an intoxicating drink.
3. a yellow flower also red.
4. flowers of Asok = a tree.
5. a creeper.

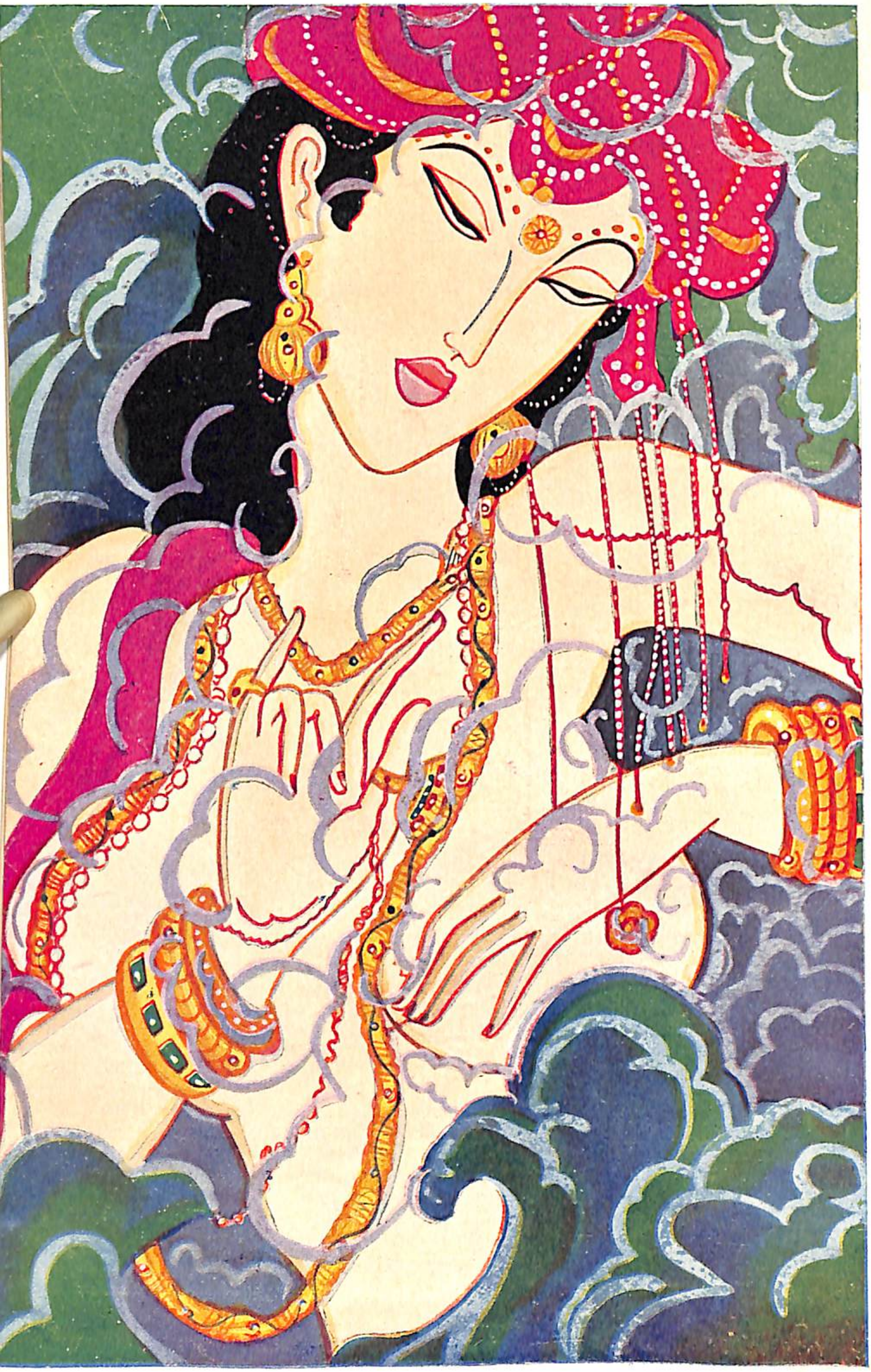

धवल चंदन लेप पर
सित हार उर पर डोल सुंदर
भुजाओं पर वलय अङ्गद
जघन पर रशना क्वणन कर,
नितंबिनि उर अनङ्गातुर
में नवल श्री भर रहे हैं
हेम कमलों से मुखों पर
पत्र लेखन खिल रहे हैं,
स्वेदकण मुक्तासदृश
उस पत्र रचना में झलक चल
फैल जाते हैं, नया
उन्माद नयनों में समाकुल,
प्रिये आया मधु सुकोमल !

स्तनेषु हाराः सितचन्दनार्द्रा भुजेषु सङ्गं वलयाङ्गदानि
प्रयान्त्यनङ्गातुरमानसानांनितम्बिनीनां जघनेषु काञ्च्यः
सपत्रलेखेषु विलासिनीनां वक्त्रेषु हेमाम्बुरुहोपमेषु
रत्नान्तरे मौक्तिक सङ्गरम्यः स्वेदागमो विस्तरतामुपैति।

Pearl strings quiver on white-sandal pasted breasts.
Bracelets on the arms and girdles on the thighs tinkle,
Now bestow more beauty to the lustful
heavy-hipped damsels.
Patra Rachana[1] enchants beauty on the
golden lotus faces,
Drops of perspiration amidst the paints
glitter like pearls and make the eyes lambent.

---

1. Sandal paints on the face. Marks which women make on the face to beautify it.

१०४

शिथिल बंधन, काम-व्याकुल
गात, अब उच्छ्वसित होते
कंत को पा पास उत्सुक
नारियों के हृदय होते,
काम स्त्रीतन को मदालस
और मंथर, पाण्डु कृश कर
बार बार मनोज्ञ जृम्भित
कर रहा सौंदर्य त्वरभर,
मदिर आलस नयन चंचल,
पाण्डु गण्डस्थल हुए अब;
कठिन कर स्तन, क्षीण कर कटि,
पीन कर प्रत्येक क्षण उरु,
कामिनी-प्रति-अंग में
कंदर्प स्थित होता पुलक चल,
प्रिये मधु आया सुकोमल !

उच्छ्वासयन्त्यः श्लथवन्धनानि गात्राणि कंदर्प समाकुलानि
समीपवर्तिष्वधुना प्रियेषु समुत्सुका एव भवन्तिनार्यः।
तनूनि पाण्डूनि समन्थराणि मुहुर्मुहुर्जृम्भणतत्पराणि
अङ्गान्यनङ्गः प्रमदाजनस्य करोति लावण्यससंभ्रमाणि।
नेत्रेषु लोलो मदिरालसेषु गण्डेषु पाण्डुः कठिनः स्तनेषु
मध्येषु निम्नो जघनेषु पीनः स्त्रीणामनङ्गो बहुधास्थितोऽद्य।

Lustful bodies voluptuously sigh and loosen the clothes,
Young women's hearts are enraptured by their
lovers' nearness.
Cupid makes them lazy, pale and thin,
Adds beauty as they yawn in a drowsy lust.
Making drunken eyes frisky and the temples pale,
Slimming their waists and indurating
their breasts and thighs,
The love god seats himself in every limb of the damsels.

१०५

अङ्ग में शृंगार निद्रालस
नया सा लग रहा है,
वचन में कुछ लालसा मद
श्वास कंपित हो रहा है,
कुटिल कर भ्रू, नयन तीक्षण
कटाक्ष करते, काम संबल,
रे मदालस गौर स्तन पर
विलासिनि अत्यन्त विह्वल
रक्त कुंकुम, शीत चंदन
और कालीयक मनोहर
या प्रियङ्ग कि गंधमय
कस्तूरिका का लेप कर कर
रणित नूपुर मञ्जु भरतीं
काम को करतीं विचंचल,
प्रिये आया मधु सुकोमल !

अङ्गानिनिद्रालसविभ्रमाणि वाक्यानिकिंचिन्मदरालसानि
भ्रूक्षेपाजिह्मानिच वीक्षितानिचकार कामः प्रमदाजनानाम् ।
प्रियङ्ग् कालीय ककुंकुमावतं स्तनेषु गौरेषु विलासिनीभिः
आलिप्यते चंदनमङ्गनाभिर्मदालसाभिर्मृगनाभियुक्तम् ।

Drowsy adornment in their limbs enraptures
warm breaths and desirous words,
curves of the brows and glances askance
flare up the cupid's flame,
Besmearing kumkum, white sandal,
Kaliyaka, Priyangu and fragrant musk,
On their intoxicated bodies and snowwhite breasts,
Young women tinkle their nupurs
and even render Cupid passionate.

१०६

काम मद से अलसतन
        निज वस्त्र वे भारी हटाके
धूप कालगुरु सुरभिमय
        वस्त्र सूक्ष्म सुगंधि वाले
लाक्षा रस राग रञ्जित
        पहनते हैं त्वर विलासी,
रागहृष्ट प्रसन्न होकर
        पुंस्कोकिल निज प्रियारी
आम्ररस आसवमुदित हो
        मुखर चुंबित कर रहा है,
अब कमल पर गूंज अलि
        प्रेयसि मनाता चल रहा है,
ताम्रस्तबक प्रवाल आनत
        आम्र पुष्पित झूमता कल
    प्रिये मधु आया मुकोमल !

गुरुणि वासांसि विहाय तूर्णं तनूनि लाक्षारसरञ्जितानि
सुगंधि कालागुरुधूपितानि धत्ते जनः काममदालसाङ्गः ।
पुंस्कोकिलश्चूतरसासवेन मत्तः प्रियां चुम्बति रागहृष्टः
कूजद्द्विरेफोऽप्ययमम्बुजस्थः प्रियं प्रियायाः प्रकरोतिचाटु ।

Putting off heavy garment from lustful drowsy bodies,
Voluptuous men wear fine clothes scented by
kalaguru fumes,
    and dyed by Laksha paints.
Drunken with mango juice happy male kokil,
    kisses his beloved amorously.
Now the black bee buzzes on the lotus
    to woo his paramour sweet.
Copper coloured mango blossoms are swayed
    by the breeze of the spring.

१०७

आम्र शाखा पुष्पभारा
पवन से दोलित चपल रे,
मूल तक विद्रुम अरुण सा
ताम्र चलदल पल्लवित रे
कुसुमपूर्ण अशोक रह रह
प्रोषिताओं में सुलग भर
झूमता है मलय के मृदु
स्पर्श से अनुराग भरकर।
मत्त अलि चुंबित कुसुम प्रिय
कंपमय किसलय अरुणतर
सुघर कलिकावृत मनोहर
आम्र कामी-उर विकलकर
समुत्सुक करता हृदय को
गंध जर्जर अलस भरिमल
प्रिये मधु आया सुकोमल !

ताम्रप्रवालस्तबकावनम्राश्चूतद्रुमाः पुष्पित चारुशाखाः
कुर्वन्ति कामं पवनावधूताः पर्युत्सुकं मानसमङ्गनानाम् ।
आमूलतो विद्रुमरागताम्रं सपल्लवाः पुष्पचयं दधानाः
कुर्वन्त्यशोका हृदयं सशोकं निरीक्ष्यमाणा नवयौवनानाम् ।
मत्तद्विरेफ परिचुम्बित चारु पुष्पा मन्दानिला कुलितनम्रमृदु प्रवालाः
कुर्वन्ति कामिमनसां सहसोत्सुकत्वं चूताभिरामकलिकाः समवेक्ष्यमाणाः ।

Blossomed mango branches wave in the breeze,
Coral hued flower laden Asok swings slowly
and excites the damsels,
Black bee-kissed-lovely-flowers,
and tender leaves shaken by the breeze,
And sprouting mango trees engulf the hearts
and set the lovers eager for Cupid's sports.

१०८

लो प्रिये ! मुख श्री मनोरम
देखते जो तृप्त होकर
देखते करुबक मदिर नव
मञ्जरी का रूप क्षण भर
कामशर से व्यथित होते
क्या करे तब रे प्रवासी ?
कुसुम से भर दीप्त किंशुक-
राशि नव ज्वाला शिखा सी
लो कि अब सुखमय विकंपित
मलय से, आरक्त चंचल
रक्त वसना नववधू सी
वसुमती दिखती सुनिर्मल
प्रिये मधु आया सुकोमल !

कांतामुख द्युति जुषामपि चोद्गतानां शोभां परां कुरबक द्रुम मञ्जरीणाम्
दृष्ट्वा प्रिये सहृदयस्य भवेन्नकस्य कंदर्पबाण पतन व्यथितं हि चेतः।
आदीप्त वन्हिसदृशैर्मरुता ऽ वधूतैः सर्वत्र किंशुकवनैः कुसुमावनम्रैः
सद्यो वसन्तसमये हि समाचितेयं रक्तांशुका नववधूरिव भाति भूमिः।

They who look at the damsel's beautiful face,
and then behold the kurubaka groves,
How can their hearts escape from cupid's darts ?
Wearing flower laden kinrukas[1] like deep red flames
shaken by the breeze,
The earth appears a bride decked in scarlet robes

---

1. trees.

१०९

योषिता मुख श्री निहित हैं
तरुण जन के हृदय आतुर
मुखर शुक मुख लाल किंशुक
किसे कर देते न कातर ?
कर्णिकारों ने न किसके
हृदय दग्ध किये अचानक ?
और कोकिल के मधुर
कूजन न किसके मारते शर ?
कल वचन उन्मादतापित
पुंस्कोकिल गूंजते हैं
मदिर कल गुञ्जन उठा कर
भृंग रह रह झूमते हैं,
कुल गृहों में विनय शालिनि
कुलवधू का हृदय क्षण में
लाज से भरते चपल ये
विकल करते मुग्ध मन में,
तार सः झंकारता मृदु
समीरण लहरा रहा चल,
प्रिये आया मधु सुकोमल !

किं किंशुकैः शुकमुखच्छविभिर्नभिन्नं किं कर्णिकार कुसमैर्न कृतं नु दग्धम्
यत्कोकिलः पुनरयं मधुरैर्वचोभियूनां मनः सुवदनानिहितं निहन्ति।
पुंस्कोकिलैः कलवचोभिरुपात्तहर्षैः कूजद्भिरुन्मदकलानि वचांसि भृङ्गैः
लज्जान्वितं सविनयं हृदयं क्षणेन पर्याकुलं कुलगृहेऽपिकृतं वधूनाम्।

Who is not moved by kinsukas
red like a parrot's beak ?
Who is not set to flames by the Karnikaras !
Whose heart escapes cupid's darts
when the cuckoo sings !
And whose patence stands a damsel's lovely face ?
With a passionate fever the male cuckoo sings,
And black bees hum in musical notes.
Modext bride's eyes now bashfully gleam
when she hears the passionate kokil's cry.

११०

आस भर नीहारिका के
स्पर्श की मनहर अनिल रे
कुसुममय सहकार शाखा
को विकंपित कर चपल रे
कोकिलों का श्रवणप्रिय
कूजन दिशाओं में गुंजाता
हृदय को हरता विवश कर
कुञ्ज छाया को रिझाता;
सविभ्रम वधु का मधुर
रमणीय उज्ज्वल हास्य खिलता
कामजित् मुनि का हृदय भी
देखकर अब स्थिर न रहता
रागमलिन तरुण हृदय अब
क्या करें अति मुग्ध काकुल,
प्रिये मधु आया सुकोमल !

आकंपयन्कुसुमिताः सहकार शाखा विस्तारयन्परभृतस्य वचांसि दिक्षु
वायुर्विवाति हृदयानि हरन्नराणां नीहार पातविगमात्सुभगो वसन्ते।
कुन्दैः सविभ्रमवधूहसितावदातै रुद्धयोतितान्युपवनानि मनोहराणि
चित्तं मनेरपि हरन्ति निवृत्तरागं प्रागेव रागमलिनानि मनाँसि यूनाम् ।।

In the hope of a contact with dew drops cool,
shaking the blossoming branches of the mango trees,
echoing the sweet songs of the kokil's.
playing with the shadows in the groves,
The spring breeze glides with a zealous gait.
Then a smile twitches on the bashful bride's lips.
Behold ! even sages can not stand that mutely,
The lustful youth ! What a torture to their hearts !!

१११

नितंबों पर हेमरशना
हार चंचल हैं स्तनों के
कोकिलों का नाद प्रतिध्वनि
कर रहा प्रत्युत्तरों से,
शिथिल करते मदन का भी
गर्व लो वे गात कोमल,
पुलकते पर्वत शिला के
जाल ले अति नाद से कल,
आम्र मञ्जरियां निरखकर
विकल हो जाते प्रवासी
उच्चस्वर करते विलाप
दिशांत तक छाई उदासी;
मानिनी के हृदय में
शरतीक्ष्ण मधु फिर फिर चुभाता,
कुसुमभास अनङ्ग की
पगचाप को दिशि दिशि गुंजाता
समद मधुभर पुंस्कोकिल
कूजता तरु तरु सुविह्वल
प्रिये मधु आया सुकोमल !

आलम्बिहेमरसनाः स्तनसक्तहाराः कंदर्पदर्प शिथिलीकृत गात्रयष्ट्यः
मासे मधौ मधुरकोकिलभृङ्गनादैर्नार्यो हरन्ति हृदयं प्रभसं नराणाम् ।
नानामनोज्ञकुसुमद्रुमभूषितान्तान्हृष्टान्यपुष्ट निनदाकुलसानुदेशान्
शैलेयजाल परिणाद्धशिलातलौघान्दृष्ट्वा जनः क्षितिभृतोमुदमेति सर्वः ।
नेत्रे निमीलयति रोदिति याति शोकं घ्राणं करेण विरुणद्धि विरोति चोच्चैः
कान्तावियोगपरिखेदितचित्त वृत्ति र्दृष्ट्वाध्वगः कुसुमितान्सहकारवृक्षान् ।
समद मधुभराणां कोकिलानां च नादैः कुसुमितसहकारैः र्णिकारैश्च रम्यः
इषुभिरिव सुतीक्ष्णैर्मानसं मानिनीनां तुदति कुसुममासो मन्मथोद्वेजनाय ।

The girdle on the hips and the pearl strings
on the breasts quiver,

The kokil's notes resound in the air,
And women make even the Love god crazy.
Rocky mountains echo with lovely notes,
And love lorn travellers lament aloud
when they behold the charms of beauty everywhere.
Fresh flowers pierce the hearts of arrogant women
like sharp arrows,
And frenzied notes of the kokil overflow on the trees.

११२

मधु सुरभिमुख कमल सुंदर
लोध्र के से ताम्र लोचन,
कुरुबकों से ग्रथित अलकें
पीनगुरुतर दीप्तिमयस्तन
सुमांसल मनहर नितंब
किसे न कर देते सुचंचल
काम के यह अग्रदूत
सुरभि भरे निश्वास आकुल
ओ विसुध सीमन्तिनी !
मधु वंदनाकर प्राण विह्वल,
प्रिये मधु आया सुकोमल !

मधुसुरभिमुखाब्जं लोचने लोध्रताम्रे
नवकुरुबकपूर्णः केशपाशो मनोज्ञः।
गुरुतरकुचयुग्मं श्रोणिबिम्ब तथैव
न भवति किमिदानीं योषितां मन्मथाय।

Lovely fragrant lotus faces of women,
Lodhra ruddy eyes,
Locks of hair adorned by kurubakas,
Round and beautiful breasts,
and heavy well-shaped hips,
Whom do they not malaise ?

११३

सुघर मञ्जुल आम्र मञ्जरि श्रेष्ठ जिसका शर सफल रे,
रूप किंशुक चाप, ज्या अलि, शुभ्र शशि है छत्र सितरे,
मलय गज उन्मत्त, कोकिल बंदिजन हैं, लोकजित रे,
वह अनङ्ग करे सभी का मधुर मंगल प्रीति हित ले,
करे नव कल्याण जग का, स्नेह बरसे सरस मंगल !
प्रिये मधु आया सुकोमल !

आम्रीमञ्जुल मञ्जरी वरशरः सत्किंशुकं यद्धनु—
ज्यायस्यालिकुलं कलङ्करहितं छत्रं सितांशुः सितम्
मत्तेभो मलयानिलः परभृतो यद्‌वन्दिनो लोकजि—
त्सोऽयं वो वितरीतरीतु वितनुर्भद्रं वसन्तान्वितः।

Lovely blossoming mango groves are his
lovely arrows,
Kinshuka is the bow and black bees its string.
Bright moon is his imperial canopy,
And the spring breeze is his mighty elephant.
Kokils sing like minstrels,
Behold ! He has conquerred the worlds.
May that victorious Cupid shower benefaction on all.

ooo

अनुक्रमणिका

	सर्ग	पद्य	पृष्ठ
अगरुसुरभिधूपा०	५	९७	११०
अङ्गानि निद्रा०	६	१०५	१२४
अन्या प्रकामसुरत०	४	८९	९८
अन्या प्रियेण परि०	४	९०	९९
अन्याश्चिरं सुरत	४	९१	१००
अपगतमदरागा	५	९७	११०
अभीक्ष्णमुच्चैः	२	३५	३८
असह्यवातोद्धत०	१	९	९
असितनयनलक्ष्मीं	३	७७	८३
आकम्पयन्कुसु०	६	११०	१३०
आकम्पयनफल भरा०	३	६२	६८
आदीप्तवह्नि०	६	१०८	१२७
आ मूलतो विद्रुम०	६	१०७	१२६
आम्री मञ्जुलमञ्जरी	६	११३	१३४
आलम्बिहेमरसना	६	१११	१३१
ईषत्तुषारैः कृत०	६	१०२	११९
उच्छ्वासयन्त्यः श्लथ०	६	१०४	१२२
कदम्बसर्जार्जुन०	२	४१	४४
कनककमलकान्तैः	५	९७	११०
कमलवनचिताम्बुः	१	२५	२५
करकमलमनोज्ञाः	३	७४	८०
कर्णेषुयोग्यं	६	१०२	११९

कह्लारपद्मकुमुदानि	३	६७	७३
काचिद्विभूषयति	४	८६	९८
कांचीगुणैः कांचन०	४	८१	९०
कान्तामुखद्युतिजुषा०	६	१०८	१२७
कारण्डवानन०	३	६०	६६
कालागुरुप्रचुर०	२	४५	४८
काशांशुकाविकच	३	५३	५९
काशैर्महीशिशिर०	३	५४	६०
किं० किं० शुकः शुक०	६	१०९	१२८
कुन्दैः सविभ्रमवधू०	६	११०	१३०
कुवलयदलनीलै०	२	४६	४९
कुसुम्भरागारुणितै०	६	१०२	११९
कृतापराधान्बहुशो०	५	९५	१०७
केशान्नितान्तघननील०	३	७०	७६
गजगवयमृगेन्द्रा	१	२४	२४
गात्राणि कालीयक०	४	८२	९१
गुरुणि वासांसि	६	१०६	१२५
गृहीतताम्बूल	५	९५	१०७
चंचन्मनोज्ञशफरी०	३	५५	६१
जलधरविनतानां०	२	५१	५४
ज्वलतिपवनवृद्धः	१	२२	२२
तडिल्लताशक्रधनु०	२	४३	४६
तनूनिपाण्डूनि	६	१०४	१२२
ताम्रप्रवाल०	६	१०७	१२६
तारागण प्रवर०	३	५९	६५
तुषारसंघातनिपात०	५	९४	१०६
तृणोत्करैरुद्गत०	२	३३	३६
तृषाकुलैश्चातक०	२	२८	३१
तृषा महत्या हत०	१	१३	१३
दधतिवर कुचाग्रै०	२	४९	५२
दन्तच्छदैः सव्रण०	४	८८	९७
दिवसकरमयूखै	३	७६	८२

द्रुमाः सपुष्पाः	६	१०१	११८
नखपदचितभागा०	५	९८	११२
न चन्दनं चन्द्र०	५	९५	१०६
न बाहुयुग्मेषु विला०	४	८१	९०
नवजलकण खग सङ्गा०	२	५०	५३
नवप्रवालोद्‌गम०	४	८०	८९
नष्टं धनुर्बलभिदो	३	६४	७०
नाना मनोज कुसुम०	६	१११	१३१
नितम्बबिम्बैः स०	१	४	४
नितान्तनीलोत्पल०	२	२७	३०
नितान्तलाक्षारस०	१	५	५
निपातयन्त्यः परित०	२	३१	३५
निरुद्ध वातायन०	५	९४	१०६
निर्माल्यदाम	४	९०	९९
निशाः शशाङ्क०	१	२	२
नीलोत्पलाभाम्बुद०	२	४०	४३
नृत्य प्रयोग०	३	६५	७१
नेत्र निमीलयति	६	१११	१३१
नेत्रेषु लोलो	६	१०४	१२२
नेत्रोत्सवो हृदय०	३	६१	६७
पटुतरदवदाहो०	१	१९	१९
पयोधराश्चन्दन	१	५	५
पयोधरैः कुङ्कुम०	५	९६	१०८
पयोधरैर्भीम०	२	३६	३९
पाकं व्रजन्ती	४	८६	९५
पीनस्तनोरः स्थल०	४	८४	९३
पुंस्कोकिलश्चूत०	६	१०६	१२५
पुंस्कोकिलैः कलवच०	६	१०९	१२८
पुष्पासवमोद०	५	८७	९६
पृथुजघनभरार्ताः	५	९८	११२
प्रकामकामैर्युवभिः	५	९६	१०८
प्रचण्डसूर्यः स्पृह०	१	१	१

प्रचुरगुडविकारः	५	९९	११३
प्रफुल्लचूताङ्कुर०	६	१००	११७
प्रफुल्लनीलोत्पल०	४	८६	९५
प्रभिन्नवैदूर्य०	२	३०	३३
प्रभूतशालिप्रसवैः	४	८५	९४
पुरुढ़शालीक्षु०	५	९३	१०५
प्रियङ्गुकालीय०	६	१०५	१२४
बलाहकाश्चाशनि०	२	२९	३२
बहुगुणरमणीयः का०	२	५२	५५
बहुगुणरमनीयो यो०	४	९२	१०१
बहुतर इव जातः	१	२३	२३
भिन्नांजन पचय०	३	५७	६३
मत्तद्विरेफ०	६	१०७	१२६
मधुसुरभि मुखाब्ज	६	११२	१३३
मनोज्ञकूर्पासक	५	९६	१०८
मनोहरैश्चन्दनराग	४	८०	८९
मन्दानिलाकुलित०	३	५८	६४
मार्गं समीक्ष्याति०	४	८७	९६
मालाः कदम्ब०	२	४४	४७
मुदित इव कदम्बै०	२	४७	५०
मृगाप्रचण्डातप०	१	१०	१०
रतिश्रम क्षाम०	४	८३	९२
रविप्रभोद्भिन्न०	१	१७	१७
रवेर्मयूखैरभि०	१	१२	१२
वनद्विपानां नव०	२	३९	४२
वापीजलानां	६	१०१	११८
विकचकमलवक्त्रा	३	७९	८५
विकचनवकुसुम्भ०	१	२१	२१
विपत्रपुष्पांनलिनीं	२	३९	४२
विपाण्डुरं कीट०	२	३८	४१
विलोचनेन्दीवर०	२	३७	४०
विलोलनेत्रोत्पल०	२	३४	३७

विवस्वता तीक्ष्ण०	१	१६	१६
विशुष्ककण्ठाहृत०	१	१४	१४
व्योम क्वचिद्रजत०	३	५६	६२
शरदि कुमुद०	३	७३	७९
शिरसि वकुल०	२	४८	५१
शिरोरुहैः श्रोणि०	२	४२	४५
शेफालिका कुसुम०	३	६६	७२
श्यामालताः	३	६९	७५
श्वसिति विहगवर्गः	१	२०	२०
सचन्दनाम्बु०	१	७	७
सदा मनोज्ञं	२	३१	३४
सपत्रलेखेषु	६	१०३	१२१
सफेनलोलायतवक्त्र	१	१८	१८
समद्रमुस्तं	१	१५	१५
समदमधुभराणां	६	१११	१३१
समुद्गतस्वेद०	१	६	६
समुद्धृताशेष०	१	१६	१६
संपन्नशालि०	३	६८	७४
सविभ्रमैः सस्मित०	१	११	११
ससीकराम्भोधर०	२	२६	२९
सितेषु हर्म्येषु	१	८	८
सुगन्धिनिश्वास०	५	९६	१०८
सुरतरुचिविलासाः	३	७५	८१
सुवासितं हर्म्य०	१	३	३
सोन्माद हंस	३	६३	६९
स्तनेषु हाराः	६	१०३	१२१
स्त्रीणां विहाय	३	७८	८४
स्फुटकुमुदचितानां	३	७२	७८
हंसैर्जिता सुललिता	३	६९	७५
हारैः सचन्दनरसैः	३	७१	७७
हुताग्निकल्पैः	१	१५	१५

ऋतु संहार

रांगेय राघव